7

दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 गोरखपुर का खिचड़ी मेला
5 गोरखपुर के लोगों के लिए बड़ी खबर
6 'पाप धोने का मौका खोया...

UPHIN51019 | वर्षः 01, अंकः 25 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 15 जनवरी, 2024

घने कोहरे में लिपटा प्रदेश

पछुआ हवा ने बढ़ाई गलन, न्यूनतम तापमान अभी और लुढ़केगा

यूपी में मौसम की मार

:लखनऊ। पारे में उतार–चढ़ाव और हवा की चाल ठिठुरन बढ़ा रही है। बुधवार को 20 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चली पछुआ हवा ने गलन बढ़ा दी। गुरुवार की सुबह की शुरुआत घने कोहरे के साथ हुई। लखनऊ और उसके आसपास के जिलों में घना कोहरा रहा। सड़कों पर वाहन रेंगते नजर आए। कोहरे के साथ गलन लोगों को परेशान करती रही। इसके पहले बुधवार को हल्की धूप जरुर निकली लेकिन हवाओं की वजह से गलन लोगों को ठिठुराती रही।

पारे में उतार–चढ़ाव और हवा की चाल ठिठुरन बढ़ा रही है। 20 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चली पछुआ हवा ने गलन बढ़ा दी। इसके चलते धूप बेअसर रही। हालांकि तापमान में विशेष बदलाव नहीं आया। अधिकतम तापमान 17 तो न्यूनतम 9.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। मौसम विभाग के वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह के मुताबिक, अगले दो–तीन दिन में अधिकतम तापमान दो डिग्री तक बढ़ने और न्यूनतम तापमान के लुढ़कने के आसार हैं। फिलहाल गलन से राहत नहीं मिलेगी।

आठवीं तक के स्कूलों की छुट्टी 13 तक बढ़ी

ठंड को देखते हुए कक्षा आठ तक के सभी सरकारी, गैर सरकारी व निजी स्कूलों में 13 जनवरी तक छुट्टी बढ़ा दी गई है। इससे पहले यह अवकाश 6 से 10 जनवरी तक बढ़ाया गया था। जिलाधिकारी सूर्यपाल गंगवार की ओर से बुधवार को जारी आदेश में कहा गया है कि नौवीं से 12वीं तक के सभी विद्यालय सुबह 10 से दोपहर तीन बजे तक चलेंगे। आदेश के मुताबिक विद्यालय प्रबंधक, प्रधानाचार्य की ये जिम्मेदारी होगी कि कक्षा में ठंड से बचाव की व्यवस्थाएं कराएं। संभव हो तो कक्षाओं का संचालन ऑनलाइन माध्यम से कराया जाए।

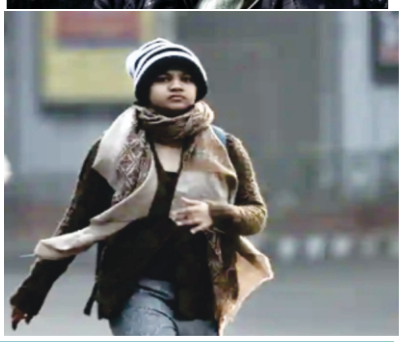

उत्तर प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ बरेली दौरे पर रहे। जहां उन्होंने करोड़ों रुपये की परियोजनाओं की सौगात दी। इस दौरान उन्होंने बैडलमटन भी खेला।

फ्यूचर प्लान • पर्यटकों को लुभाने के लिए सरकार की बड़ी तैयारी

लक्षद्वीप के टूरिज्म इंफ्रा पर पांच साल में खर्च होंगे 6 हजार करोड़

कोच्ची

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लक्षद्वीप की यात्रा और उस पर मालदीव की प्रतिक्रिया के बाद अरब सागर में स्थित 36 द्वीपों वाला यह केंद्र शासित प्रदेश दुनियाभर में सुर्खियों में आ गया है। लक्षद्वीप में पर्यटन विकास के लिए नई योजनाओं पर काम शुरू हो गया है। सबसे ज्यादा फोकस यहां के टूरिज्म इंफ्रास्ट्रक्टर पर है, जो अभी बेहद सीमित है। सरकार ने लक्षद्वीप के विकास का फ्यूचर प्लान तैयार किया है। इसके तहत अगले पांच साल में लक्षद्वीप में पर्यटन इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करने के लिए 6 हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे। इसके अलावा, सबसे महत्वपूर्ण कदम यह है कि यहां आने वाले बढ़ते पर्यटकों के लिए बड़ा नया एयरपोर्ट विकसित किया जाएगा।

लक्षद्वीप के कलेक्टर अर्जुन मोहन का कहना है कि अभी सबसे ज्यादा फोकस द्वीप समूह के दक्षिणी हिस्से स्थित मिनिकॉय द्वीप पर नए एयरपोर्ट विकसित करने पर है। जिसका सैन्य और नागरिक दोनों उड़ानों के लिए उपयोग किया जा सकेगा। नए एयरपोर्ट का डिजाइन बड़े विमानों की लैंडिंग के हिसाब से तैयार किया जा रहा है। ताकि कम लागत में यहां आने वाले ज्यादा से ज्यादा पर्यटकों को हैंडल किया जा सकें। मिनिकॉय में बनने वाला एयरपोर्ट सामरिक रूप से भी बेहद महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह सैन्य फैसिलिटी से मालदीव और श्रीलंका के पास है और सैन्य उड़ानें शुरू होने से देश की सुरक्षा और चाक-चौबंद होगी। फिलहाल लक्षद्वीप में अगत्ती द्वीप पर एयरपोर्ट है जो द्वीप का एकमात्र एयरपोर्ट है और यहां सिर्फ छोटे विमानों की ही लैंडिंग हो पाती है। लक्षद्वीप में करवत्ती आने वाले लोगों को बोट, छोटे जहाजों या फिर अगत्ती से हेलीकॉप्टर से आना पड़ता है। अभी लक्षद्वीप पहुंचने के लिए कोच्ची से अगत्ती के लिए एक फ्लाइट थी। पर्यटकों को यहां लाने के लिए 7 जहाज थे, जो कोच्ची से यहां आने में 16 से 18 घंटे लेते हैं।

कनेक्टिविटी बढ़ाने के साथ रिसॉर्ट बनाने पर जोर दिया जा रहा

दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरू से कनेक्टिंग फ्लाइट की तैयारी

करीब 32 वर्ग किमी में फैले लक्षद्वीप की आबादी करीब 64 हजार है। लक्षद्वीप प्रशासन ने केंद्र सरकार से मांग की है कि उन्हें एक और जहाज दिया जाए। द्वीप को कोच्ची के अलावा उत्तर केरल के बेयपोर पोर्ट और कर्नाटक के मेंगलोर पोर्ट से भी कनेक्टिविटी दी जाए। लक्षद्वीप प्रशासन ने दिल्ली, मुंबई और बेंग्लुरू के लिए कनेक्टिंग फ्लाइट की मांग की है।

360 से ज्यादा लैगून विला विकसित कर रही सरकार

समय के साथ यहां पर्यटकों के लिए सुविधाओं में भी विस्तार हो रहा है। सरकार 360 लैगून विला के प्रोजेक्ट पर भी काम कर रही है। लैगून विला प्रोजेक्ट में सुहेली, मिनिकॉय और कदमात द्वीप पर 230 बिच विला, 140 वाटर विला और 370 रूम विला बनाने की तैयारी है। हाल में टाटा ग्रुप की सहयोगी इंडियन होटल्स लि. ने ताज नाम से रिसॉर्ट लॉन्च किए हैं।

पर्यटकों को आवेदन के दिन ही परमिट जारी करने की तैयारी

- पर्यटन को बढ़ाने के लिए करवत्ती और बेंगराम द्वीप पर परमिट के साथ शराब की बिक्री की अनुमति दी गई है।
- लक्षद्वीप के प्रशासक प्रफुल पटेल ने कहा है कि परमिट एक ही दिन में जारी करने का प्रयास हो रहा है।
- अभी पर्यटक एक बार मंजूरी के बाद 7 दिन ही रुक सकते हैं, इसे भी बढ़ाने पर विचार हो रहा है।

शिवसेना कभी भी शिंदे की नहीं हो सकती। उनका और शिवसेना का रिश्ता खत्म हुआ है, इसलिए शिवसेना हमारी है। खुद दो-तीन पार्टियां बदलने वाले नार्वेकर ने बताया कि पार्टी कैसे बदलनी है। नतीजा मैच फिक्सिंग ही निकला, इसलिए हमारी लड़ाई जारी रहेगी। हम सुप्रीम कोर्ट जाएंगे।

उद्धव ठाकरे, पूर्व CM महाराष्ट्र

सम्पादकीय

लोकतंत्र की रक्षा का विकल्प

महाराष्ट्र में जून 2022 से चल रहे राजनैतिक प्रहसन में 10 जनवरी को फिर एक नया मोड़ आया

महाराष्ट्र में जून 2022 से चल रहे राजनैतिक प्रहसन में 10 जनवरी को फिर एक नया मोड़ आया। विधानसभा स्पीकर राहुल नार्वेकर ने शिवसेना में दो फाड़ करने वाले एकनाथ शिंदे और उनके गुट के सभी विधायकों की अयोग्यता पर अपना फैसला सुना दिया। अनुमान के मुताबिक फैसला शिंदे गुट के पक्ष में ही आया। राहुल नार्वेकर ने 1999 के शिवसेना के संविधान को मान्य कहते हुए शिंदे गुट को ही असली शिवसेना माना है। इससे पहले शिवसेना के नाम और निशान लड़ाई में भी चुनाव आयोग ने भी शिंदे गुट के पक्ष में फैसला सुनाया था। महाराष्ट्र का मामला इससे पहले सुप्रीम कोर्ट भी पहुंच चुका है, जहां अदालत ने शिंदे सरकार को बने रहने के निर्देश दिए थे लेकिन विधानसभा अध्यक्ष को विधायकों की अयोग्यता पर फैसला सुनाने कहा था। अदालत ने श्री नार्वेकर को 31 दिसंबर तक फैसला सुनाने का निर्देश दिया था, लेकिन फिर भी समय सीमा 10 दिन बढ़ा दी गई। इस फैसले को सुनाने में चाहे लंबा वक्त लिया गया हो, लेकिन सभी को अहसास था कि भाजपा के राज में किसी भी तरह उद्धव गुट को जीत नहीं मिलेगी। अब फैसले के पीछे चाहे जो तर्क दिए जाएं, यह तो जाहिर ही है कि भाजपा के सहयोग से एक पार्टी में फूट डालकर, उसके मंत्रियों और विधायकों को खरीदकर भाजपा को सत्ता में लाया गया। पिछले चुनावों में महाराष्ट्र में महाविकास अघाड़ी की सरकार बनी थी, जिसमें भाजपा को विपक्ष में बैठना पड़ा था, लेकिन 2022 में भाजपा ने आपरेशन लोटस चलाया और सत्ता में आ गई। उसके बाद से शिवसेना में नाम, निशान और सत्ता की लड़ाई चली, जिस पर बुधवार को उद्धव गुट को एक और मात मिली है। बुधवार का फैसला आने से पहले स्पीकर श्री नार्वेकर और मुख्यमंत्री श्री शिंदे की मुलाकात भी हुई थी, जिस पर उद्धव गुट ने सवाल उठाए थे, लेकिन अब इंसाफ की लड़ाई में नीयत और नैतिकता के सवाल हाशिए पर धकेले जा रहे हैं। फ्रेंच भाषा का एक शब्द है–देजा वू, यानी ऐसी कोई घटना या बात जिसे देख–सुनकर महसूस हो कि ऐसा पहले भी हुआ है। बस याद नहीं आता कि कब और कहां। महाराष्ट्र के ताजा प्रकरण को देखकर देजा वू जैसा अनुभव तो हुआ है, लेकिन जरा सा याददाश्त पर जोर डालें तो याद आ जाएगा कि लोकतंत्र का मखौल उड़ाने वाली ऐसी एक नहीं कई घटनाएं पिछले 10 सालों में देश में हुई हैं। जैसे राम मंदिर–बाबरी मस्जिद विवाद में सुप्रीम कोर्ट ने माना कि बाबरी मस्जिद को तोड़ना गलत था, लेकिन फिर भी राम मंदिर उसी जगह बनाने की अनुमति भी दे दी।

गलती करने वालों को कोई सजा भी अब तक नहीं हुई और राम मंदिर का राजनैतिक उद्घाटन करने की तैयारी हो गई है। इसी तरह महाराष्ट्र मामले में भी 11 मई 2023 को अपने अहम फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने उद्धव ठाकरे की सरकार बहाल न करने का फैसला सुनाया था, क्योंकि श्री ठाकरे ने मुख्यमंत्री पद से खुद ही इस्तीफा दिया था। मगर इसके साथ ही इस पूरे प्रकरण में यह भी माना था कि शिवसेना के दूसरे गुट के व्हिप को मान्यता देकर विधानसभा अध्यक्ष ने गलत किया। शीर्ष अदालत ने यह भी कहा था कि राज्यपाल ने फ्लोर टेस्ट करने का जो आदेश सुनाया था, वह गलत था। विधानसभा अध्यक्ष और राज्यपाल ने जो गलत किया, वो सही कैसे होगा, इसका कोई सूत्र अदालत के फैसले से नहीं मिला। अलबत्ता उद्धव ठाकरे को अपने एक साथी द्वारा दिए गए धोखे के बाद इस्तीफा देने की सजा सत्ता से बाहर होकर चुकानी पड़ी।

अरुणाचल प्रदेश, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, गोवा, महाराष्ट्र, बिहार, पिछले 10 सालों में इन राज्यों में भाजपा का किसी न किसी तरह सत्ता में आना, राजनीति शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए अध्ययन और शोध का विषय हो सकता है। विश्व में लोकतंत्र की सर्वाधिक प्रचलित परिभाषा है, जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा शासन। लेकिन भारत में भाजपा के छत्र चले एक नयी परिभाषा और अध्याय लोकतंत्र के नाम पर लिखा जा चुका है। जिसमें तंत्र गाढ़े अक्षरों में लिखा हुआ है, और लोक को हाशिए पर धकेल दिया गया है। महाराष्ट्र में शिवसेना के प्रकरण के बहाने देश की अदालत और चुनाव आयोग जैसी स्वायत्त संस्था के पास सुनहरा मौका था कि वे लिखे हुए नियमों और कानूनों पर आंख मूंदकर चलने की जगह नैतिकता पर बल देते हुए गलत और सही के बीच के भेद को उजागर करते। इससे आईंदा कोई भी राजनैतिक दल कानून की कमजोरियों और अपनी ताकत का इस्तेमाल कर लोकतंत्र के अपहरण की गुस्ताखी नहीं करता। मगर ऐसा नहीं हुआ। अब महाराष्ट्र फिर उस मोड़ पर पहुंच गया है, जहां शिवसेना और समूचे लोकतंत्र के लिए एक नयी लड़ाई का रास्ता खुल गया है। उद्धव ठाकरे ने बुधवार को फैसला आने से पहले ही कह दिया था कि– 'यह वह मामला है जो साबित करेगा कि देश में लोकतंत्र बचेगा या नहीं।' यह देश में लोकतंत्र के लिए निर्णायक कारक बनने जा रहा है। उद्धव ठाकरे अब शायद सुप्रीम कोर्ट जाने का फैसला लें। क्योंकि उन्होंने पहले ही इसके संकेत दे दिए थे और बुधवार के फैसले के बाद अदालत से इस मामले में स्वतः संज्ञान की उम्मीद भी जताई थी। अब देखना दिलचस्प होगा कि इस लड़ाई का अंतिम अंजाम क्या होता है। क्या सुप्रीम कोर्ट लोकतंत्र की रक्षा करने के लिए कोई बड़ा कदम उठाता है, या फिर नियमों और कानूनों की आड़ में जनता से किए गए छलावे को जारी रखा जाता है।

राष्ट्रीय युवा दिवस और स्वामी विवेकानंद जयंती
सभी धर्म, एकात्मक धर्म की अभिव्यक्तियां हैं

स्वामी विवेकानंद (1863 –1902) एक महान आध्यात्मवादी, राष्ट्रनिर्माता भारतीय संस्कृति के भक्त और नैतिकता के पुजारी थे

सभी संतों और दूतों का एक विशिष्ट संदेश होता है। पहले उनके सन्देश सुनने चाहिए फिर उनके जीवन को देखना चाहिए। आप देखेंगे कि उनका संपूर्ण जीवन स्वयं व्याख्यायित एवं प्रकाशवान है। मूर्ख अज्ञानी अपने मतों से आरंभ करके अपने मानसिक विकास के हिसाब के अपने विचारों के हित में व्याख्यायित करते हैं और उन्हें महान गुरुओं से संबंधित बताते हैं। वे इन शिक्षाओं को लेकर गलतफहमियां रखते हैं।

स्वामी विवेकानंद (1863 –1902) एक महान आध्यात्मवादी,राष्ट्रनिर्माता भारतीय संस्कृति के भक्त और नैतिकता के पुजारी थे। उन्होंने विश्व मंच पर वेद और वेदान्त की प्रतिष्ठा स्थापित कर संसार को प्रभावित किया। पश्चिम की तुलना में भारत की भाषा,साहित्य, ज्ञान–विज्ञान, इतिहास, संस्कृति और धर्म कहां अधिक समृद्ध एवं उन्नत है उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया। उन्होंने न केवल हिन्दू धर्म दर्शन का प्रचार किया वरन् दुनिया में प्रचलित अन्य धर्मों और मतों के श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों को आदर भाव से चर्चा की।

स्वामी जी ने अपने भाषणों, लिखे पत्रों व लेखों के कुछ हिस्सों में इस्लाम धर्म एवं धर्मावलंबियों की प्रशंसा में विचार व्यक्त किये :'टर्की का सुल्तान अफ्रीका के बाजार से एक नीग्रो खरीद सकता है, उसे जंजीरों में जकड़ कर टर्की ला सकता है लेकिन यदि वह नीग्रो इस्लाम स्वीकारता है और उसमें पर्याप्त योग्यतायें और क्षमताएं हैं तो वह सुल्तान की बेटी से ब्याह तक कर सकता है। इसकी तुलना नीग्रो अमेरिकियों और भारतीयों की अपने देश में किये जा रहे व्यवहारों से कीजिये। हिन्दू क्या करते हैं? यदि आपकी मिशनरी में से कोई किसी रूढ़िवादी का भोजन छू भी दे तो वह उसे उठाकर फेंक देगा। यदि हमारे महान दर्शन को छोड़ दें तो हमारी व्यवहारगत कमजोरियों को आप देख सकते है। पर दूसरी विचारधाराओं से भिन्न इस्लाम धर्मावलंबियों की खूबियां देखिए, जो रंग और जाति से हटकर समभाव–संपूर्ण समभाव प्रदर्शित करते हैं।'

उक्त विचार स्वामी विवेकानन्द ने 3 फरवरी 1900 को कैलिफोर्निया, अमेरिका में 'विश्व के श्रेष्ठ गुरू' विषयक अपने भाषण में व्यक्त किये। विश्व में हिन्दू दर्शन को प्रतिष्ठा दिलाने में सक्रिय रहे, युग प्रवर्तक विलक्षण विचारक, ओजस्वी प्रखर वक्ता स्वामी विवेकानन्द द्वारा अभिव्यक्त विविध विचारों को व्यापक अर्थों में ग्रहण करने से सहज ही समझा जा सकता है कि स्वामी विवेकानन्द बिना किसी संकोच के विश्व में प्रचलित सभी धर्मों का निष्पक्ष भाव से आदर करते रहे। वे मानव धर्म, सेवा धर्म और मातृभूमि के प्रति उदात्त त्याग भाव से ओतप्रोत थे। विभिन्न धर्मावलंबियों,धर्मगुरुओं के श्रेष्ठ मानवीय गुणों का वे सहज सम्मान करते और बेलाग लपेट उनका आख्यान करते थे। कैलिफोर्निया में दिए उक्त भाषण में ही उन्होंने कहा 'मुहम्मद साहब समानता के दूत थे। आप कहें उनके धर्म में क्या खूबी है? यदि उसमें खूबियां नहीं है तो वह जीवित कैसे हैं? मात्र अच्छाइयां ही जीवित रहती और चलती हैं। अच्छाई सबल है इसीलिए है। अशुद्ध,अपवित्र व्यक्ति का जीवन आज भी कितना लंबा होता है? निःसंदेह शुद्धता शक्ति है, अच्छाइयां शक्ति हैं। इस्लाम मानने वाले कैसे जीवित हैं, क्या उनकी शिक्षा में कुछ भी अच्छा नहीं है? उनमें ज्यादा अच्छाइयां हैं। मुहम्मद साहब मुसलमानों के भ्रातभाव के प्रवक्ता संत थे।'

सभी संतों और दूतों का एक विशिष्ट संदेश होता है। पहले उनके सन्देश सुनने चाहिए फिर उनके जीवन को देखना चाहिए। आप देखेंगे कि उनका संपूर्ण जीवन स्वयं व्याख्यायित एवं प्रकाशवान है। मूर्ख अज्ञानी अपने मतों से आरंभ करके अपने मानसिक विकास के हिसाब के अपने विचारों के हित में व्याख्यायित करते हैं और उन्हें महान गुरुओं से संबंधित बताते हैं। वे इन शिक्षाओं को लेकर गलतफहमियां रखते हैं। सभी गुरुओं का मात्र जीवन ही उनकी सही टीका है। उनके जीवन को देखिये उन्होंने क्या किया? यही प्रेरणादायी रहेगा।

10 जून 1898 को मोहम्मद सरफ़राज़ हुसैन को लिखे एक पत्र में उन्होंने कहा– मानवता,प्रेम और अद्वैतवाद ही सभी धर्मों का मूल है।

अद्वैतवाद समभाव के संबंध में उन्होंने लिखा– 'मेरे अनुभव में इस्लाम और मात्र इस्लाम ही एकमात्र ऐसा धर्म जिसमें समभाव को प्रशंसनीय तरीके से अपनाया।' इसी पत्र में उन्होंने कहा– 'मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं व्यावहारिक इस्लाम के बिना वेदांतवाद के सूत्र चाहे वे कितने ही सार्वजनीन और चमत्कारपूर्ण क्यों न हों मानवमात्र के समग्र हितों के लिए मूल्यहीन हैं। हम मानव को जैसी स्थिति में ले जाना चाहते हैं वैसी स्थिति में मात्र वेद,बाइबिल और कुरान अकेले नहीं ले जा सकते हैं। इसके लिए वेद, बाइबिल और कुरान को समरस करना जरूरी है।

सभी धर्म, एकात्मक धर्म की अभिव्यक्तियां हैं जिसे जो मुनासिब मार्ग लगे चुन सकता है। हमारी जन्मभूमि के लिए हिंदुत्व और इस्लाम की दो महान व्यवस्थाओं का सम्मिलन वेदांत मस्तिष्क और इस्लाम शरीर एकमात्र आशा है।

मैं अपने अन्तः करण से वेदांत मस्तिष्क और इस्लामी शरीर लिए कांतिवान अजेय सुदृढ़ भारत को इस अस्थिरता से निकाल कर अभ्युदय देखता हूं।' ईश्वर के प्रति आस्थावान, विश्व के इन दो महान आध्यात्मिक मार्गों पर चलने वाले सभी को साथ ले, समरसता लाकर भारत को विश्व का गुरुतर शक्तिकेंद्र बनाने में सफल हों। विश्व में बढ़ रही विध्वंसक चुनौतियों का सामना विश्वगुरु भारत इसी तरह कर सके।

कांग्रेस–वाम को सीटों के बंटवारे से कुछ राज्यों में लाभ संभव

कांग्रेस निश्चित रूप से इंडिया ब्लॉक की प्रमुख पार्टी है, तथा वामपंथियों सहित सभी भाजपाविरोधी ताकतों की लामबंदी से इसकी संभावनाएं और अधिक उज्ज्वल हो गई हैं। 2024 के लोकसभा चुनावों में सांप्रदायिकता और अधिनायकवाद की ताकतों के खिलाफ लड़ाई में देश को आगे ले जाने के लिए कांग्रेस और वामपंथियों को एक ठोस कार्यक्रम के साथ गठबंधन का आधार तैयार करना होगा। इंडिया ब्लॉक के घटक दलों के बीच सीट बंटवारे को लेकर बातचीत जोर–शोर से शुरू हो गई है।

कांग्रेस आलाकमान ने अंततः प्रत्येक राज्य में राजनीतिक स्थिति की बारीकियों को ध्यान में रखते हुए भारत के साझेदारों के बीच समझौतों को शीघ्र पूरा करने की आवश्यकता को समझा है। यह एक स्वागत योग्य घटनाक्रम है।शुरुआत करने के लिए, कांग्रेस और दो वामपंथी दल सीपीआई और सीपीआई (एम) केरल के साथ एक अलग स्तर पर व्यवहार करने पर सहमत हुए हैं, जहां सीपीआई (एम) के नेतृत्व वाला वाम मोर्चा और कांग्रेस के नेतृत्व वाला यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट लड़ेंगे। 20 लोकसभा सीटों के लिए वहां दोनों आपस में ही चुनाव लड़ेंगी परन्तु जो भी जितनी भी सीटें जीतेगी वह इंडिया ब्लॉक की ही जीत होगी क्योंकि वहां भाजपा उनके लिए कोई खतरा नहीं है। फिर बात बंगाल की है जहां वाम मोर्चा बेहद कमजोर स्थिति में है और उसने राज्य में भाजपा और तृणमूल कांग्रेस दोनों से लड़ने का फैसला किया है। अगर कांग्रेस तृणमूल के साथ गठबंधन करने का फैसला लेती है, तो वामपंथी छोटे सहयोगी आईएसएफ के साथ लोकसभा चुनाव अकेले लड़ेंगे।

इसके अलावा चार राज्य हैं, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, बिहार और झारखंड जहां इंडिया गुट एक साथ काम कर रहा है और कांग्रेस प्रमुख राजनीतिक पार्टी नहीं बल्कि साझेदारों में से एक है। इनमें से पहले से ही द्रमुक के नेतृत्व वाले गठबंधन के तहत तमिलनाडु में सीपीआई और सीपीआई (एम) के पास दो–दो सीटें हैं। उम्मीद है कि यह पैटर्न 2024 के चुनावों में भी जारी रहेगा। अन्य तीन राज्यों में, बिहार में, सीपीआई एक सीट के लिए बातचीत कर रही है, जबकि अधिक शक्तिशाली सीपीआई (एमएल) लिबरेशन न्यूनतम दो सीटों के लिए बातचीत कर रही है। जद (यू) और राजद दोनों को अंततः यह स्वीकार करना पड़ सकता है। अब, ऐसे राज्य हैं, जहां कांग्रेस भाजपा या गैर–इंडिया गठबंधन वाली क्षेत्रीय पार्टी से लड़ने वाली इंडिया ब्लॉक की मुख्य पार्टी है। साथ ही, सीपीआई और सीपीआई (एम) के पास भी अपने छोटे आधार हैं जो इंडिया गठबंधन के उम्मीदवारों की जीत में प्रभावी योगदान दे सकते हैं। ये राज्य हैं असम, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना, राजस्थान और छत्तीसगढ़। असम में लोकसभा की 14 सीटें हैं। वर्तमान में नौ भाजपा के पास, तीन कांग्रेस के पास, एक एआईयूडीएफ के साथ और एक निर्दलीय हैं। इंडिया ब्लॉक में प्रमुख पार्टी के रूप में कांग्रेस सीपीआई (एम) और सीपीआई को एक–एक सीट देने पर विचार कर सकती है। दोनों पार्टियों का विशिष्ट आधार है और उनके पास पहले भी लोकसभा में सदस्य थे। असम को मुख्यमंत्री डॉ. हिमंतबिस्वा शर्मा के नेतृत्व वाले एनडीए का मुकाबला करने के लिए एक मजबूत इंडिया ब्लॉक के संयोजन की आवश्यकता है। फिर ओडिशा में 21 सीटें हैं जिनमें से 2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेडी को 12, भाजपा को 8 और कांग्रेस को एक सीट मिली थी। इंडिया गठबंधन को भाजपा और बीजद दोनों से लड़ना है। दोनों को प्रभावी ढंग से टक्कर देने के लिए कांग्रेस आसानी से सीपीआई और सीपीआई (एम) को एक–एक सीट दे सकती है। दोनों पार्टियों का जिलों में सीमित आधार है और वामपंथी जन संगठनों के सक्रिय समर्थन से कांग्रेस को अत्यधिक लाभ होगा।

जहां तक आंध्र प्रदेश की बात है तो यह राज्य कभी कम्युनिस्टों का गढ़ था, लेकिन अब यहां जगनमोहन रेड्डी के नेतृत्व वाली वाईएसआरसीपी का दबदबा है। 2019 के चुनाव में राज्य की 25 सीटों में से वाईएसआरसीपी को 22 और टीडीपी को दो सीटें मिली थीं, जबकि भाजपा और कांग्रेस को कोई सीट नहीं मिली। जगन की बहन के कांग्रेस में शामिल होने से प्रदेश कांग्रेस थोड़ी मजबूत हुई है, परन्तु यह पर्याप्त नहीं है। ऐसे कुछ निर्वाचन क्षेत्र हैं जहां वामपंथियों का समर्थन आधार दस प्रतिशत से अधिक है। टीडीपी भाजपा के साथ जा सकती है, इसलिए कांग्रेस और दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों का संपूर्ण गठबंधन अच्छी चुनावी टक्कर दे सकता है। सीपीआई और सीपीआई (एम) दोनों को कांग्रेस एक से दो सीटें दे सकती है।

इसी तरह राजस्थान में चार सीटों पर सीपीआई (एम) का मजबूत आधार है। हालांकि पार्टी पिछले विधानसभा चुनाव में अपनी सीटें हार गई, लेकिन वह राज्य की एक सीट से चुनाव लड़ने और जीतने की क्षमता रखती है। चुनावी गठबंधन को मजबूत करने के लिए कांग्रेस को राजस्थान में सीपीआई (एम) को एक सीट देने पर विचार करना अच्छा रहेगा।

कांग्रेस को समाजवादी पार्टी से भी बातचीत करनी होगी क्योंकि पार्टी का राज्य में चार से पांच लोकसभा क्षेत्रों में अच्छा जनाधार है।

संक्षेप में, इस चुनावी लड़ाई में इंडिया ब्लॉक का उद्देश्य घटक राजनीतिक पार्टियों की संगठनात्मक शक्ति का इष्टतम उपयोग करना होना चाहिए। कांग्रेस निश्चित रूप से इंडिया ब्लॉक की प्रमुख पार्टी है, तथा वामपंथियों सहित सभी भाजपाविरोधी ताकतों की लामबंदी से इसकी संभावनाएं और अधिक उज्ज्वल हो गई हैं। 2024 के लोकसभा चुनावों में सांप्रदायिकता और अधिनायकवाद की ताकतों के खिलाफ लड़ाई में देश को आगे ले जाने के लिए कांग्रेस और वामपंथियों को एक ठोस कार्यक्रम के साथ गठबंधन का आधार तैयार करना होगा।

गोरखपुर का खिचड़ी मेला

बच्चों को लुभाएंगे चरखी और घोड़ा वाले झूले, रोज उमड़ रही भीड़

संवाद न्यूज एजेंसी गोरखपुर। चरखी और घोड़ा वाले झूले, बांसुरी और गुब्बारे, मौत का कुआं और मन ललचा देने वाला खजला। यहीं नहीं, ज्वेलरी व सौंदर्य प्रसाधन की दुकानें भी, जहां महिलाओं की काफी भीड़ नजर आती है। यह दृश्य गोरखनाथ मंदिर में लगे खिचड़ी मेले का है। आज के युवा यहां इतिहास का हिस्सा बनते जा रहे पुराने दौर के मनोरंजन के साधनों को देख सकते हैं। मेला परिसर में 50 से अधिक दुकानों की झांकियां सज गई हैं और अभी से लोगों की अच्छी खासी तादाद भी पहुंचने लगी है, बच्चे आनंद उठाने लगे हैं।

मेला प्रबंधक शिवशंकर उपाध्याय ने बताया कि मेले की औपचारिक शुरुआत 15 जनवरी को होगी। मेले में टिकटिक घोड़ा, म्यूजिकल डांस झूला, डबल डेकर झूले, ब्रेकडांस, ड्रेगन, रेंजर, ज्वाइंट व्हील, स्लंबो, टोराटोरा, बड़ी नाव के जैसे झूलों के साथ ही मौत के कुआं का जमकर लुत्फ उठा रहे हैं। महिलाएं मेले में घरेलू सामान और श्रृंगार के सामानों की खरीदारी कर रही हैं। वहीं लोग लजीज व्यंजनों का भी जमकर जायका ले रहे हैं। इस बार हरियाणा के डबल डेकर झूले, लखनऊ का टिकटिक घोड़ा झूला बच्चों को भरपूर मनोरंजन करने के लिए तैयार है। बुलंदशहर खजला के साथ ही लखनऊ की चाट लोगों का जायका बढ़ाएगी।

खजला की है विशेष पहचान

गोरखनाथ मंदिर में लगने वाले खिचड़ी मेला में सबसे अधिक मांग खजला की रहती है। बुलंदशहर का ये खास व्यंजन खिचड़ी मेले में ही बिकता है। खिचड़ी मेले में करीब 50 वर्षों से खजला की दुकान लगाने वाले दिल्ली के राकेश ने बताया कि उनकी तीसरी पीढ़ी मेले में खजला की दुकान लगाने आ रही है। बताया कि जब शुरुआत के दिनों में खजला पांच से छह रुपये किलो बिकता था, अब वही खजला 400 रुपये किलो बिक रहा है। बताया कि खजला तीन तरह के होते हैं, इसमें मीठा, नमकीन और खोया वाले खजला लोगों को खूब पसंद आती है।

35 वर्षों से खिचड़ी मेले में लगता है फोटो स्टूडियो

खिचड़ी मेले को यादगार बनाने के लिए ज्यादातर लोग अपने मोबाइल में तस्वीरों को कैद करते हैं, लेकिन एक समय था कि मेले में लगने वाले फोटो स्टूडियो पर फोटो खिंचवाने के लिए लोगों की लंबी कतार लगती थी। मेले में स्टूडियो लेकर पहुंचे कानपुर के नसीम ने बताया कि मेले में 35 वर्षों से हम लोग स्टूडियो लेकर आ रहे हैं, लेकिन अब पहले की तुलना में 20 फीसदी लोग ही स्टूडियो में फोटो खिंचवाने आते हैं। इससे खर्चा भी मुश्किल से निकल पाता है।

महिलाएं को खूब भाता है खिचड़ी मेला

गोरखनाथ मंदिर में सबसे अधिक भीड़ महिलाओं की होती है, इसका कारण मेले में लगने वाले घरेलू और श्रृंगार के सामान की दुकानें हैं। मेले में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के साथ ही दिल्ली के उत्पाद सस्ते दामों पर मिल जाते हैं। श्रृंगार का दुकान लगाने वाले लखीमपुर खीरी के मोहसिन ने बताया कि खिचड़ी मेले में वह 10 वर्षों से दुकान लगा रहे हैं। ज्यादातर सामान वह दिल्ली से मंगाते हैं। बताया खिचड़ी मेले में वह डेढ़ महीने के लिए आते हैं। श्रृंगार के सामानों में महिलाएं का अच्छा रूझान रहता है।

हरियाणा, दिल्ली, बिहार के झूले बढ़ाएंगे रोमांच

मेले में हरियाणा, बिहार, दिल्ली, बस्ती, कन्नौज, लखनऊ आदि राज्यों और शहरों से झूले आए हैं। 10 वर्षों से लखनऊ से झूला लेकर गोरखनाथ मंदिर आ रहे सुनील ने बताया कि मेले में झूले को लेकर खासा उत्साह रहता है। बड़ी संख्या में युवा और बच्चे झूला झूलने के लिए ही मेले में आते हैं।

सौ साल से लगता है मेला...आजादी के बाद बढ़ा दायरा

गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ ने बताते हैं, गोरखनाथ मंदिर में लगने वाले खिचड़ी मेले की परंपरा तो कई सौ वर्षों पुरानी है। सौ साल पहले तक यहां स्थानीय लोग ही अपनी दुकानें लगाते थे। जब देश आजाद हुआ तब खिचड़ी मेले को भव्य रूप मिला। महंत दिग्विजयनाथ के समय में खिचड़ी मेले में दूसरे राज्यों की झूले और खानपान की दुकानें लगाने वाले लोग आने लगे। 1980 के बाद महंत अवेद्यनाथ के समय में इसका दायरा काफी बढ़ गया। देश के कोने–कोने से लोग दुकानें लगाने आने लगे। समय के साथ ही दुकानें बढ़ती गई तो मेला परिसर का दायरा भी बढ़ा दिया गया।

कर वसूली: गोरखपुर जीडीए–नगर निगम के फेर में फंसीं 12 कालोनियां..बाशिदे पशोपेश में

गोरखपुर। जीडीए उपाध्यक्ष आनंद वर्द्धन ने कहा कि जीडीए द्वारा नगर निगम से 12 कॉलोनियों का हस्तांतरण लेने की अपील की गई है। जब तक ये कॉलोनियां हस्तांतरित नहीं होतीं, सफाई आदि मद में आवासीय व व्यावसायिक भवन के लिए अलग–अलग कर लिए जाएंगे। कई साल पहले निर्माण कार्य पूरा होने एवं आवंटियों के बस जाने के बाद भी तारामंडल क्षेत्र में गोरखपुर विकास प्राधिकरण (जीडीए) की 12 कॉलोनियों का हस्तांतरण नगर निगम को नहीं हो पाया है। जीडीए की ओर से इसके लिए कई बार प्रयास भी किया गया, लेकिन नगर निगम ने अभी तक कब्जा प्राप्त नहीं किया।

हालांकि, नगर निगम की टीम सर्वे भी कर चुकी है, लेकिन हस्तांतरण प्रक्रिया लटकी हुई है। इसको लेकर यहां के बाशिंदे पशोपेश में हैं। इस बीच जीडीए की कई कॉलोनियों के हैंडओवर लेने के बजाय नगर निगम गृह कर लेने की तैयारी में जुट गया है, जबकि यहां के लोग मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं। अब वे परेशान हैं कि कहीं जीडीए और नगर निगम दोनों अलग–अलग कर न वसूलने लगें।

वसुंधरा एन्क्लेव एक व दो में रह रहे लोगों से नगर निगम गृह कर वसूलने की तैयारी में है।

कॉलोनी के सभी 40 ब्लॉक के 12 फ्लैट पर गृह कर वसूलने के लिए मार्किंग की जा चुकी है। इसके साथ अन्य कॉलोनियों में बिना कोई सुविधा मुहैया कराए नगर निगम गृह कर वसूलने की तैयारी में है। जीडीए व नगर निगम की संयुक्त टीम की ओर से जून 2020 में निरीक्षण करने के बाद 11 परियोजनाओं को नगर निगम को हस्तगत करने का प्रस्ताव बनाया गया था। उस दौरान संयुक्त निरीक्षण में नगर निगम की ओर से निर्णय लिया गया था कि बुद्ध विहार पार्ट ए, बी, सी, आम्रपाली योजना और अमरावती योजना नगर निगम की सीमा से बाहर होने के कारण निगम को

हस्तगत नहीं हो सकती हैं।

हालांकि अब ये तीनों योजनाएं भी नगर निगम की सीमा में शामिल हो चुकी हैं। अब नगर निगम द्वारा बताए गए कार्य भी इन योजनाओं में पूरे कर लिए गए हैं। जीडीए की ओर से दिसंबर 2021 में नगर आयुक्त के नाम पत्र लिखकर तारामंडल क्षेत्र की 12 कॉलोनियों का कब्जा लेने का अनुरोध किया जा चुका है।

वसुंधरा में चंदा जुटाकर सोसाइटी करवाती है सफा

वसुंधरा एनक्लेव सोसाइटी के आनंद श्रीवास्तव ने बताया कि कॉलोनी में साफ सफाई के लिए चार सफाईकर्मियों को रखा गया है। उनको दस–दस हजार रुपये मासिक दिया जाता है। सोसाइटी कॉलोनी में रह रहे लोगों से रकम जुटा कर उनका मानदेय का भुगतान करती है। जीडीए द्वारा सफाई को लेकर ध्यान नहीं देने के बाद मजबूरी में इस कदम को उठाना पड़ा। कुछ दिन पहले नगर निगम ने गृहकर के लिए सभी मकानों पर मार्किंग की है।

अब जीडीए सफाई के नाम पर कर लेने की तैयारी कर रहा है। जबतक कॉलोनी में व्यवस्था सुदृढ़ नहीं होगी तब तक कोई कर नहीं दिया जाएगा।

टूटी सड़क व नाली देख नगर निगम ने नहीं लिया हैंडओवर

लोहिया इन्क्लेव में रहने वाले अरुण कुमार सिंह ने बताया कि जीडीए के अनुरोध पर कुछ दिन पहले नगर निगम की टीम हैंडओवर लेने के लिए कॉलोनी में सर्वे करने पहुंची थी, लेकिन टूटी सड़क व नाली देख वह पीछे हट गई। उन्होंने काम पूरा कराने के बाद कॉलोनी को हैंडओवर लेने की बात कही। हालांकि जीडीए ने नाली, सड़क व बाउंड्रीवाल को बनाने के लिए ढाई करोड़ रुपये पास कर दिए हैं। मोहल्ले में सफाई जीडीए एक फ्रेंचाइजी के माध्यम से करवाती है।

हस्तांतरण के बाद मिलेंगी सुविधाएं

इन कालोनियों के नगर निगम में हस्तांतरण होने के बाद निगम द्वारा यहां सुविधाएं मुहैया कराई जाएंगी और कालोनीवासियों से टैक्स भी लिया जाएगा। साफ–सफाई, जलापूर्ति आदि का जिम्मा निगम के पास होगा। कालोनियों के हस्तांतरित न होने से यहां के लोगों को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

इन कॉलोनियों के हस्तांतरण का है प्रस्ताव

वसुंधरा एनक्लेव प्रथम, द्वितीय व तृतीय आवासीय योजना, लोहिया एन्क्लेव आवासीय योजना, वैशाली आवासीय योजना, यशोधरा कुंज आवासीय योजना, अमरावती निकुंज आवासीय योजना, कारपोरेट योजना, बुद्ध विहार आवासीय योजना पार्ट ए, बी एवं सी, आम्रपाली आवासीय योजना, सिद्धार्थपुरम विस्तार आवासीय योजना, गौतम विहार विस्तार आवासीय योजना। जीडीए उपाध्यक्ष आनंद वर्द्धन ने कहा कि जीडीए द्वारा नगर निगम से 12 कॉलोनियों का हस्तांतरण लेने की अपील की गई है। जब तक ये कॉलोनियां हस्तांतरित नहीं होतीं, सफाई आदि मद में आवासीय व व्यावसायिक भवन के लिए अलग–अलग कर लिए जाएंगे।

इमामबाड़ा कालेज के दो बैंक खाते हुए सीज

नगर निगम ने की कार्रवाई

गोरखपुर। अपर नगर आयुक्त निरंकार सिंह ने बताया कि बड़े बकाएदारों पर भी कार्रवाई लगातार चलती रहेगी। इमामबाड़ा पर 36 लाख रुपये से अधिक का बकाया था। इसके दो खातों को सीज कर अटैच किया गया है। नगर निगम की तरफ से इमामबाड़ा गर्ल्स डिग्री कॉलेज के दो बैंकों के खातों को सीज कर दिया गया। इन खातों को नगर निगम ने अटैच करते हुए एक सप्ताह का समय दिया है। इसके बाद भी अगर भुगतान नहीं किया गया तो इतने रकम की संपत्ति को जब्त कर नीलामी की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जाएगी। इमामबाड़ा पर नगर निगम संपत्ति कर का वित्तीय वर्ष 2023–24 का 36 लाख 15 हजार रुपये बकाया है। इसी वजह से कार्रवाई की गई है। नगर निगम अब 133 बड़े बकाएदारों को चिह्नित कर कार्रवाई शुरू कर रही है। 31 जनवरी को ''133 लोगों पर 150 करोड़ रुपये से अधिक का बकाया'' शीर्षक से खबर प्रकाशित की थी। नगर निगम के पूर्व उपसभापति जियाउल इस्लाम ने इस मुद्दे को बोर्ड की बैठक में भी उठाया था। प्रकाशित खबर मेयर और नगर आयुक्त के टेबल पर जाकर रख दिया था।

नगर आयुक्त ने बोर्ड की बैठक में ही सभी को आश्वस्त किया था कि इन सभी बकाएदारों से वसूली कराई जाएगी। नहीं करने पर खातों को सीज कर जब्त भी किया जाएगा। सबसे पहले इमामबाड़ा गर्ल्स डिग्री कॉलेज पर कार्रवाई की गई। नगर निगम ने केनरा बैंक की शाखा बैंक रोड व इंडियन बैंक सिविल लाइन में संचालित खातों को अटैच कर लिया। ऐसे ही नथमलपुर में दो लाख 73 हजार रुपये बकाए पर भवन स्वामी का एसबीआई का खाता अटैच कर लिया गया। इन्हें एक सप्ताह का समय दिया गया है। अपर नगर आयुक्त निरंकार सिंह ने बताया कि बड़े बकाएदारों पर भी कार्रवाई लगातार चलती रहेगी। इमामबाड़ा पर 36 लाख रुपये से अधिक का बकाया था। इसके दो खातों को सीज कर अटैच किया गया है।

स्वच्छ सर्वेक्षण में लगातार सातवीं बार नंबर वन बना इंदौर

हरदीप लसह पुरी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2019 तक भारत को स्वच्छ बनाने की मांग की थी और खुले में शौच जाने को खत्म करने का बिड़ा उठाया था। उन्होंने कहा था कि महात्मा गांधी को स्वच्छ भारत से बेहतर तोहफा कैसे होगा। यह मिशन एक आंदोलन बन गया। इसमें सभी ने श्रमदान किया। यह अब अभिन्न अंग बन गया है। सख्त प्रक्रिया है।

सूरत भी टॉप पर; महाराष्ट्र सबसे साफ राज्य

न्यूज नेटवर्क, इंदौर। इंदौर अब स्वच्छता के सातवें आसमान पर है। पहली बार सूरत को भी संयुक्त तौर पर सबसे स्वच्छ शहर बन गया। स्वच्छता हमारे संस्कार में है, इसलिए हम नंबर वन हैं। गुरुवार को दिल्ली के भारत मंडपम में समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के हाथों मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने पुरस्कार लिया। इस दौरान नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, इंदौर के महापौर पुष्यमित्र भार्गव और निगमायुक्त हर्षिका सिंह भी मौजूद थे। तीसरे स्थान पर नवी मुंबई को मिला।

राज्यों में महाराष्ट्र नंबर वन

राज्यों के स्वच्छता रैंकिंग में मध्य प्रदेश को दूसरे सबसे स्वच्छ राज्य का दर्जा मिला है। महाराष्ट्र इस मामले में पहले नंबर पर आया है। प्रदेश भर में आम लोगों से मिली प्रतिक्रिया (फीडबैक), स्वच्छता को लेकर प्रदेश भर में चलाई गई परियोजनाएं, बजट आवंटन आदि के आधार पर प्रदेशों की स्वच्छ रैंकिंग तय की जाती है। स्वच्छ राज्यों में छत्तीसगढ़ तीसरे नंबर पर रहा। पिछले साल मप्र को देश का सबसे स्वच्छ राज्य चुना गया था, वहीं छत्तीसगढ़ दूसरे नंबर पर था। इस तरह दोनों राज्यों की रैंकिंग एक–एक पायदान गिरी है। भोपाल को देश की स्वच्छतम राज्य राजधानी का खिताब मिला है। भोपाल ने पिछले साल भी यह तमगा हासिल किया था।

भोपाल पांचवां सबसे स्वच्छ शहर

देश के 10 लाख से अधिक आबादी वाले महानगरों की श्रेणी में भोपाल को देश का पांचवां सबसे स्वच्छ शहर चुना गया। महापौर मालती राय के साथ नगर निगम कमिश्नर

फ्रेंक नोबल ए ने राष्ट्रपति के हाथों पुरस्कार ग्रहण किया। पिछले साल भोपाल देश के सबसे स्वच्छ शहरों में छठवें नंबर पर रहा था। वहीं वर्ष 2017 और 2018 में लगातार दो साल देश में दूसरी रैंक हासिल की थी। 01 लाख से अधिक आबादी वाले शहरों की श्रेणी में प्रदेश के नौरोजाबाद को फास्ट मूविंग सिटी का पहला और अमरकंटक को दूसरा पुरस्कार मिला।

स्वच्छता मिशन को लेकर हरदीप लसह पुरी ने क्या कहा ?

हरदीप सिंह पुरी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2019 तक भारत को स्वच्छ बनाने की मांग की थी और खुले में शौच जाने को खत्म करने का बिड़ा उठाया था। उन्होंने कहा था कि महात्मा गांधी को स्वच्छ भारत से बेहतर तोहफा कैसे होगा। यह मिशन एक आंदोलन बन गया। इसमें सभी ने श्रमदान किया। यह अब अभिन्न अंग बन गया है। सख्त प्रक्रिया है। 2016 में यह सर्वेक्षण शुरू हुआ जो अब सबसे बड़ा सर्वेक्षण बन गया है। लगभग सभी शहरों और गांवों में बड़ी संख्या में सार्वजनिक शौचालय बनाए गए हैं। 2014 में 14 से 15 प्रतिशत कचरे की प्रोसेसिंग होती थी, लेकिन अब 75 से 76 प्रतिशत तक कचरा प्रोसेस होता है। स्वच्छता केवल आदत नहीं है, यह एक आंदोलन। एक अगली पीढ़ी भी इस आंदोलन में भाग ले रही है।

ओडिशा के सैंड आर्ट कलाकार सुदर्शन पटनायक ने कार्यक्रम की शुरुआत भारत में स्वच्छता की शुरुआत को अपनी कला से दर्शाया। बालीवुड के ख्यात गायक कैलाश खेर ने स्वच्छता एंथेम की प्रस्तुति दी। वर्ष 2017 से इंदौर स्वच्छ सर्वेक्षण में प्रथम आ रहा है। जनभागीदारी, नवाचारों और आपसी समन्वय वाले जज्बे ने ही हमें देश के दूसरे शहरों से आगे बनाए रखा है।

इंदौर को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी कह चुके हैं कि दूसरे शहर जब किसी बात को करने का सोचते हैं, इंदौर उसे कर चुका होता है। आज जब देश के दूसरे शहर स्वच्छता का महत्व समझकर इसे अपनाने के बारे में विचार कर रहे हैं, हम स्वच्छता का सातवां आसमान छू चुके हैं। स्वच्छता को लेकर कहा जाता है कि यहां के लोगों की सिर्फ आदत नहीं, बल्कि त्योहार और संस्कार है।

समारोह के साक्षी बनने के लिए महापौर पुष्यमित्र भार्गव, निगमायुक्त हर्षिका सिंह, अपर आयुक्त, महापौर परिषद के सदस्य, मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक (सीएसआइ), सात सफाई मित्र, दो दरोगा दिल्ली पहुंच चुके हैं। शहरवासी भी इस समारोह के साक्षी बनें, इसके लिए नगर निगम ने शहर के प्रमुख पर समारोह के सीधे प्रसारण की व्यवस्था की है।

विभिन्न श्रेणियों में प्रदेश होगा सम्मानित

स्वच्छता में अव्वल शहर (संभावित) : 1. इंदौर, 2. सूरत, 3. नवी मुंबई।
स्वच्छता में अव्वल प्रदेश : 1. मध्य प्रदेश, 2. महाराष्ट्र।
कैंटोमेंट बोर्ड श्रेणी : महू।
पश्चिम जोन में 50 हजार आबादी वाले शहरों में : बुधनी (मप्र)।
स्वच्छ राजधानी : भोपाल
अन्य पुरस्कार : अमरकंटक शहर

मुख्य चौराहों पर होगा कार्यक्रम का सीधा प्रसारण

दिल्ली में आयोजित इस समारोह को लेकर इंदौरवासियों में उत्साह है। इंदौरवासी भी इस कार्यक्रम के साक्षी बन सकें, इसके लिए नगर निगम ने मुख्य चौराहों पर कार्यक्रम के सीधे प्रसारण की व्यवस्था की है। जगह–जगह मिठाई बांटी जाएगी। अपर आयुक्त अभय राजनगांवकर ने बताया कि राजवाड़ा, बड़ा गणपति, महू नाका, मेघदूत चौराहा, 56 दुकान, निगम मुख्यालय सहित चौराहों पर एलईडी स्क्रीन लगाकर कार्यक्रम के सीधे प्रसारण की व्यवस्था की गई है। इन जगहों पर आमजन के बैठने की व्यवस्था भी रहेगी। निगमकर्मी भी इन चौराहों पर जनता के साथ जश्न में शामिल होंगे। 56 दुकान पर भी सफाई मित्रों का सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा।

राजवाड़ा पर होगा मुख्य समारोह

नगर निगम की टीम राष्ट्रपति के हाथों पुरस्कार लेकर गुरुवार रात करीब 8.30 बजे तक इंदौर पहुंच जाएगी। टीम एयरपोर्ट से सीधे राजवाड़ा पहुंचेगी। यहां देवी अहिल्या की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने के बाद जश्न मनाया जाएगा। ढोल–ताशे के साथ निगमकर्मी, सफाई मित्र, अधिकारी, कर्मचारी आयोजन में शामिल होंगे। इस मौके पर मिठाई वितरण भी किया जाएगा। कोई भी आम शहरी इस कार्यक्रम में शामिल हो सकेगा।

चांदी के राम दरबार और श्रीराम मंदिर माडल की मांग बढ़ी

संवाद न्यूज एजेंसी, गोरखपुर। सराफा कारोबारियों का मानना है कि रामलला की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी तक शहर में लगभग पांच से सात करोड़ रुपये के राम मंदिर के मॉडलों और राम दरबार की बिक्री हो सकती है। अयोध्या में 22 जनवरी को प्रभु श्रीराम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होगी। गोरक्षनगरी में भी इसके लिए लोगों में खूब उत्साह है। लोग अपने–अपने तरीके से इस उत्सव को मनाने की तैयारी में जुट गए हैं। सराफा बाजार में भी इसका असर दिखने लगा है। श्रद्धालुओं की मांग को देखते हुए सराफा बाजार चांदी से बने श्रीराम मंदिर और राम दरबार के मॉडल लेकर आया है। लोगों की मांग के अनुसार अलग–अलग वजन के मंदिर और राम दरबार के मॉडल तैयार भी किए जा रहे हैं।

सहालग खत्म होने के बाद अचानक राम मंदिर के सोने–चांदी के मॉडलों की बिक्री बढ़ गई है। बड़ी संख्या में लोग घरों, दुकानों और प्रतिष्ठानों में इन्हें स्थापित करने के लिए खरीद रहे हैं। सराफा कारोबारियों का मानना है कि रामलला की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी तक शहर में लगभग पांच से सात करोड़ रुपये के राम मंदिर के मॉडलों और राम दरबार की बिक्री हो सकती है।

सराफा बाजार में इन दिनों राम मंदिर के मॉडल खरीदने की धूम है। तमाम ग्राहक अपनी पसंद के आकार, वजन और नक्काशी वाले राम मंदिर के मॉडल का आर्डर दे रहे हैं। हिंदी बाजार के श्री श्याम ज्वेल्र्स के निदेशक मनीष राज बर्नवाल ने बताया कि अभी 800 ग्राम से लेकर डेढ़ किलो तक के श्रीराम मंदिर के मॉडलों की मांग अधिक है।

चांदी पर बेहद महीने नक्काशी के साथ उकेर कर इसे तैयार किया जा रहा है। 22 तारीख के दिन फिलहाल पांच लोगों की बुकिंग पहले से ही है। नंदा नगर की नयनतारा सिंह ने बताया कि रविवार को श्रीराम मंदिर मॉडल की बुकिंग का आर्डर दे आई हूं। 22 जनवरी के दिन इसे खरीदकर घर में स्थापित करने की तैयारी है।

श्रीराम लश्वकेट, कड़े और ध्वजा की भी बढ़ी मांग

सराफा व्यापारी अनूप अग्निहोत्री ने बताया कि श्रीराम ध्वजा, श्रीराम अंगवस्त्र सहित श्रीराम के चित्र वाली माला, लॉकेट की भी काफी ज्यादा संख्या में मांग है। चाभी के छल्ले, सोने–चांदी के राम दरबार के चित्र और कड़े आदि की भी काफी मांग हो रही है।

आय–जाति व निवास प्रमाणपत्र गोरखपुर में 28 हजार आवेदन लटके तहसील का चक्कर काट रहे अभ्यर्थी

गोरखपुर। सदर तहसीलदार विकास सिंह ने कहा कि तीन दिनों तक ई–डिस्ट्रिक्ट का सर्वर पूरे प्रदेश में काम नहीं कर रहा था। पुलिस भर्ती के आवेदन के लिए अभ्यर्थियों की ओर से प्रमाणपत्र के लिए भारी संख्या में आवेदन आ गए। 28 दिसंबर को आठ हजार और 29 दिसंबर को पांच हजार आवेदन आए, इसके चलते सर्वर पर लोड बढ़ गया। गोरखपुर सदर तहसील में आय–जाति और निवास प्रमाणपत्र के करीब 28 हजार से ज्यादा आवेदन लटके हुए हैं। इसके चलते पुलिस भर्ती परीक्षा और छात्रवृत्ति का आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। तहसील प्रशासन की ओर से बताया जा रहा है कि तीन दिनों तक सर्वर के काम न करने और अब उसके स्लो होने से आवेदन लंबित हुए हैं। हालात यह कि सप्ताह भर में जहां प्रमाणपत्र बन जाने चाहिए, एक महीने से ज्यादा समय होने के बाद अभी तक आवेदन लेखपाल तक ही नहीं पहुंच पाए हैं। अभ्यर्थी लेखपाल से लेकर तहसीलदार कार्यालय का चक्कर लगा रहे हैं, लेकिन प्रमाणपत्र नहीं मिल पा रहा है।

तहसील के काउंटर नंबर 16 के बाहर प्रमाणपत्र लेने वालों की भीड़ लगी थी। काफी समय तक इंतजार करने के बाद उन्हें निराशा ही हाथ लगी। नौसड़ इलाके से आए विकास एक काउंटर से दूसरे काउंटर पर आय प्रमाणपत्र की जानकारी लेने के लिए परेशान थे। फिर उन्हें बताया गया कि लेखपाल के पास जाइए, वहीं पता चल पाएगा।

लेखपाल ने उन्हें बताया कि उनके पास अभी आवेदन ही नहीं पहुंचा है। विकास ने बताया कि छात्रवृत्ति के लिए आवेदन में पहले उन्होंने अपना आय प्रमाणपत्र लगाया था, लेकिन पिता का आय प्रमाणपत्र मांगा गया है। अब उनके आय प्रमाणपत्र के लिए सप्ताह भर पहले आवेदन किया था, लेकिन अभी तक कुछ भी पता नहीं चला है। फॉर्म भरने की आखिरी तिथि 15 जनवरी तक ही है।

वहीं, बशारतपुर के अभिषेक भी काफी परेशान थे। उन्हें कोई सही जानकारी नहीं दे पा रहा था कि उनका प्रमाणपत्र कब तक बनकर मिलेगा। उन्होंने बताया कि यूपी पुलिस भर्ती का फॉर्म भरने के लिए उन्हें जाति प्रमाणपत्र की जरूरत थी। लगभग 10 दिन पहले उन्होंने आवेदन किया था, लेकिन अभी तक प्रमाणपत्र के बारे में कोई जानकारी नहीं है। पूछने पर पता चला कि कई दिनों तक सर्वर भी नहीं चल रहा था, पता करते रहिए।

सात दिन में आवेदन निस्तारित करने का है नियम

आय–जाति प्रमाणपत्र के आवेदन को सात दिन में ही निस्तारित करने का नियम है, लेकिन 20 से 25 दिन बाद भी प्रमाणपत्र जारी नहीं हो पा रहे। बहुत सारे आवेदन तो ऑनलाइन प्रक्रिया में आगे बढ़े ही नहीं हैं।

छात्रवृत्ति में अब पिता का आय प्रमाणपत्र

छात्रवृत्ति फॉर्म में पहले विद्यार्थी का आय प्रमाणपत्र जमा किया जाता था। इस बार शासन ने इसमें एक बड़ा बदलाव कर दिया है। अब छात्र की जगह माता–पिता का आय प्रमाणपत्र जमा करना होगा। बड़ी संख्या में छात्र–छात्राओं ने अपना आय प्रमाणपत्र लगाकर फॉर्म को जमा कर दिया। अब संस्थान उन्हें यह फॉर्म वापस कर रहे हैं और पिता के आय प्रमाणपत्र के साथ नया आवेदन करने को बोल रहे हैं। इस बदलाव के बाद बड़ी संख्या में लोगों ने आय प्रमाणपत्र के लिए आवेदन किए, लेकिन सर्वर की समस्या की वजह से इसमें और देरी हो रही है।

बोले आवेदक...

छात्रवृत्ति फॉर्म जमा करने के बाद पता चला कि इसमें पिता का आय प्रमाणपत्र लगेगा। अब नए सिरे से छात्रवृत्ति आवेदन के लिए पिता की आय का प्रमाणपत्र बनवाने के लिए एक हफ्ते पहले ऑनलाइन आवेदन किया था, लेकिन अभी तक प्रमाणपत्र नहीं आया।–आकाश सिंह

यूपी पुलिस का फॉर्म भरने के लिए जाति प्रमाणपत्र की जरूरत थी। 15 दिन पहले आवेदन किए थे लेकिन अभी तक कोई सूचना नहीं है।–अभिषेक कुमार मौर्या

छात्रवृत्ति फॉर्म भरने के लिए आय प्रमाणपत्र की जरूरत थी। दस दिन हो गए आवेदन किए हुए लेकिन अभी तक नहीं आया। अब आखिरी तिथि भी आ गई।–अमन सिंह

सदर तहसीलदार विकास सिंह ने कहा कि तीन दिनों तक ई–डिस्ट्रिक्ट का सर्वर पूरे प्रदेश में काम नहीं कर रहा था। पुलिस भर्ती के आवेदन के लिए अभ्यर्थियों की ओर से प्रमाणपत्र के लिए भारी संख्या में आवेदन आ गए। 28 दिसंबर को आठ हजार और 29 दिसंबर को पांच हजार आवेदन आए, इसके चलते सर्वर पर लोड बढ़ गया। अतिरिक्त स्टॉफ लगाकर लंबित प्रकरणों का निरस्तारण कराया जा रहा है। अब चार जनवरी तक के आवेदनों को लेखपाल के पास रिपोर्ट के लिए भेजा जा चुका है तीन से चार दिनों में स्थिति सामान्य हो जाएगी।

राप्तीनगर विस्तार टाउनशिप के लिए फिर जारी होगा आरएफपी

गोरखपुर। जीडीए उपाध्यक्ष आनंद वर्द्धन ने बताया कि तकनीकी कारणों से पुरानी निविदा को निरस्त किया गया है। दोबारा आरएफपी जारी कर दी गई है। इच्छुक फर्में 20 जनवरी तक आवेदन कर सकती हैं। जीडीए की ओर से प्रस्तावित राप्तीनगर विस्तार टाउनशिप एवं स्पोर्ट्स सिटी योजना के लिए बुधवार को दोबारा रिक्वेस्ट फॉर प्रपोजल जारी किया गया है। तकनीकी निविदा में एक ही कंपनी के सफल होने के कारण पर्याप्त प्रतिस्पर्धा के अभाव में टेंडर को निरस्त कर दिया गया। नई आरएफपी के तहत कंपनियां 20 जनवरी तक आवेदन कर सकेंगी।

जीडीए की ओर से मानबेला क्षेत्र में लगभग 207 एकड़ में राप्तीनगर टाउनशिप एवं स्पोर्ट्स सिटी योजना विकसित करने का प्रस्ताव तैयार किया गया है। चयनित होने वाली कंपनी को इसमें से टाउनशिप के लिए ढांचागत विकास करना है और 30 एकड़ में प्रस्तावित स्पोर्ट्स सिटी योजना में निर्माण कार्य भी करने होंगे। इसके बदले जीडीए की ओर से निर्धारित भूमि कंपनी को दी जाएगी।

जीडीए की ओर से 30 दिसंबर तक निविदा आमंत्रित की गई थी। दो कंपनियों की ओर से रुचि दिखाते हुए निविदा डाली गई। जांच में मेसर्स गैलेंट लाइफस्पेस डेवलपर प्राइवेट लिमिटेड को सफल पाया गया। दूसरी कंपनी मेसर्स भारत नगर हाउसिंग तकनीकी बोली में सफल नहीं हो सकी। जीडीए के प्रभारी मुख्य अभियंता किशन सिंह ने बताया कि अब नए सिरे से आरएफपी जारी की गई है। जीडीए उपाध्यक्ष आनंद वर्द्धन ने बताया कि तकनीकी कारणों से पुरानी निविदा को निरस्त किया गया है। दोबारा आरएफपी जारी कर दी गई है। इच्छुक फर्में 20 जनवरी तक आवेदन कर सकती हैं।

गोरखपुर के लोगों के लिए बड़ी खबर

अब ट्रामा सेंटर की तरह काम करेगी इमरजेंसी, बढ़ेंगी स्वास्थ्य सुविधाएं

गोरखपुर में अब स्वास्थ्य सुविधाएं पहले से बेहतर हो जाएगी। जिला अस्पताल की इमरजेंसी मिनी ट्रामा सेंटर की तरह काम करेगी। इस क्रम में इमरजेंसी कक्ष का जीर्णोद्धार कराने के साथ ही अन्य जरूरी सुविधाएं बढ़ाई जा रही हैं। इसके लिए इमरजेंसी में अब आईसीयू खोलने की तैयारी है। विशेषज्ञ डॉक्टर को रोगी के पहुंचने पर ऑन कॉल बुलाया जाएगा।

संवाददाता, गोरखपुर। गोरखपुर के लोगों को अब बेहतर स्वास्थ्य व्यवस्थाएं मिलेंगी। ऐसा इसलिए क्योंकि प्रशासन ने एक बड़ा फैसला लिया है। जिला अस्पताल की इमरजेंसी मिनी ट्रामा सेंटर की तरह काम करेगी। इस क्रम में इमरजेंसी कक्ष का जीर्णोद्धार कराने के साथ ही अन्य जरूरी सुविधाएं बढ़ाई जा रही हैं।

इमरजेंसी में माइनर ऑपरेशन थियेटर व डाक्टर कक्ष पहले से है।

अब एक और कमरा इमरजेंसी से जोड़कर वहां दो बेड का मिनी इंटेंसिव केयर यूनिट (आईसीयू) खोलने की तैयारी शुरू हो गई है। आईसीयू में एनेस्थेटिस्ट (निश्चेतक) व एक प्रशिक्षित स्टाफ नर्स सदैव मौजूद रहेंगी, ताकि हार्ट और न्यूरो विशेषज्ञ के पहुंचने तक रोगी को संभाला जा सके।

बढ़ाई जाएंगी ये सुविधाएं

विशेषज्ञ डॉक्टर को रोगी के पहुंचने पर ऑन कॉल बुलाया जाएगा। जिला अस्पताल में अभी तक आईसीयू नहीं है। अब वहां मिनी आईसीयू की व्यवस्था की जाएगी, जिसमें आईसीयू मॉनिटर व अन्य संसाधन भी उपलब्ध रहेंगे। अस्पताल के पास तीन एनेस्थेटिस्ट हैं। इनकी ड्यूटी तीन शिफ्टों में लगती है। आईसीयू बनने के बाद इनकी तैनाती वहीं रहेंगी, जरूरत पड़ने पर ऑपरेशन थियेटर में जाएंगे।

एम्स में भेजकर दिया जाएगा प्रशिक्षण

आठ स्टाफ नर्सों को एम्स में भेजकर हृदय रोगियों को संभालने

के लिए प्रशिक्षण दिलाया जाएगा, ताकि वे हृदय रोग विशेषज्ञ के आने तक रोगी को संभाल सकें और उसका प्राथमिक उपचार कर सकें। विशेषज्ञ डॉक्टर के देखने के बाद यदि मामला ज्यादा गंभीर होगा तो रोगी को बीआरडी मेडिकल कालेज के लिए रेफर किया जाएगा।

अधिकारी ने दी पूरी जानकारी

इमरजेंसी में मिनी आईसीयू बनाने की तैयारी शुरू हो गई है। ताकि हृदय रोगियों या दुर्घटना में घायलों को तत्काल प्राथमिक उपचार कर उनकी जान बचाई जा सके। आईसीयू में मॉनिटर व अन्य संसाधनों की उपलब्धता रहेगी। हेल्थ एटीएम की भी सुविधा होगी ताकि रात में तत्काल जांच हो सके। गंभीर रोगियों को प्राथमिक उपचार देकर बीआरडी मेडिकल कालेज के लिए रेफर कर दिया जाएगा। डा. राजेंद्र ठाकुर, प्रमुख अधीक्षक

फिर बनाया ही क्यों ? बनने के बाद से नहीं खुला बच्चों का हाइजिन पार्क

हाइजिन पार्क बनने के बाद से ही बंद पड़ा है। इसे बच्चों की सुविधा के लिए बनाया गया था। जो बच्चे थोड़े बड़े हैं वे चहारदिवारी कूदकर अंदर चले जाते हैं लेकिन छोटे बच्चों को बाहर से ही देखना पड़ता है । चर्चा है कि इसे बनाने वाली कंपनी उद्घाटन के इंतजार में इसे शुरू नहीं करा रही है ।

गोरखपुर। बच्चों की सुविधा के लिए पंत पार्क में बनाया गया हाइजिन पार्क बनने के बाद से ही बंद पड़ा है। इसमें बच्चों के झूले, बंपिंग–जंपिंग, स्लाइडर एवं हाथ धोने आदि की सुविधा दी गई है। अपनी खूबियों के कारण पार्क बच्चों को खूब आकर्षित करता है लेकिन ताला बंद होने के कारण वे उसमें जा नहीं पाते। जो बच्चे थोड़े बड़े हैं, वे चहारदिवारी कूदकर अंदर चले जाते हैं लेकिन छोटे बच्चों को बाहर से ही देखना पड़ता है। एक कंपनी की ओर से बच्चों की सुविधा के लिए गोरखपुर विकास प्राधिकरण (जीडीए) हाइजिन पार्क बनाने को जगह मांगी गई थी। जीडीए की ओर से गोरखपुर विश्वविद्यालय के सामने पंत पार्क में जगह दी गई। पार्क के भीतर लगभग दो हजार वर्ग फीट में कंपनी की ओर से बच्चों के लिए अलग से पार्क विकसित किया गया। उसके चारों ओर चहारदिवारी भी बनाई गई है।

गुरु गोरक्षनाथ को खिचड़ी चढ़ाने की है परंपरा, लगने वाला है मेला, तैयारियां है पूरी

मकर संक्रांति के अवसर पर गोरखनाथ मंदिर में आयोजित होने वाले परंपरागत खिचड़ी मेले की तैयारी अंतिम चरण में है। मंदिर के मुख्य द्वार से बेरिकेडिंग के जरिये बिना किसी बाधा के गुरु गोरक्षनाथ तक पहुंचेंगे और खिचड़ी चढ़ाकर उन्हें निवेदित करेंगे। पुरुषों और महिलाओं को ध्यान में रखते हुए गुरु गोरक्षनाथ के विग्रह तक पहुंचने के लिए अलग–अलग व्यवस्था की जा रही है।

संवाददाता, गोरखपुर। मकर संक्रांति के अवसर पर गोरखनाथ मंदिर में आयोजित होने वाले परंपरागत खिचड़ी मेले की तैयारी अंतिम चरण में है। गुरु गोरक्षनाथ के चरणों में खिचड़ी चढ़ाने के लिए मंदिर प्रबंधन की ओर से हमेशा की तरह पुख्ता इंतजाम किए जा रहे हैं। इसके लिए बाकायदा गेट से लेकर गुरु गोरक्षनाथ के विग्रह तक बैरिकेडिंग की जा रही है।

श्रद्धालु मंदिर के मुख्य द्वार से बेरिकेडिंग के जरिये बिना किसी बाधा के गुरु गोरक्षनाथ तक पहुंचेंगे और खिचड़ी चढ़ाकर उन्हें श्रद्धा निवेदित करेंगे। पुरुषों और महिलाओं को ध्यान में रखते हुए गुरु गोरक्षनाथ के विग्रह तक पहुंचने के लिए अलग–अलग व्यवस्था की जा रही है। श्रद्धालुओं को प्रवेश तो मुख्य द्वार से दिया जाएगा लेकिन खिचड़ी चढ़ाने के बाद बाहर निकलने के लिए दो द्वार का विकल्प रहेगा।

एंट्री के लिए की गई है खास व्यवस्था

भीम सरोवर द्वार से वह मुख्य मेला परिसर में प्रवेश कर सकेंगे। इसके अलावा यज्ञशाला द्वार से यात्री निवास की ओर से निकलने की व्यवस्था भी रहेगी। मंदिर प्रबंधन के द्वारिका तिवारी ने बताया कि खिचड़ी चढ़ाने आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए ठहरने का भी उचित प्रबंध मंदिर प्रबंधन ने किया है। यात्री निवास, पर्यटन सुविधा केंद्र, हिंदू सेवाश्रम आदि स्थानों पर यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था है। शौचालय व पेयजल का स्थायी और अस्थायी दोनों इंतजाम है। आम श्रद्धालुओं के लिए भंडारे की व्यवस्था भी है। दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार परिसर में 14 व 15 जनवरी को भंडारा होगा।

14 जनवरी से ही शुरू हो जाएगा खिचड़ी चढ़ाने का सिलसिला

गोरखनाथ मंदिर में मकर संक्रांति तो 15 जनवरी को मनाई जाएगी, लेकिन खिचड़ी चढ़ाने का सिलसिला 14 जनवरी से ही शुरू हो जाएगा। ऐसे में खिचड़ी चढ़ाने को लेकर मंदिर प्रबंधन की व्यवस्था 14 जनवरी से ही प्रभावी होगी। 15 जनवरी को तड़के गोरक्षपीठाधीश्वर व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गोरखनाथ बाबा को पहली खिचड़ी चढ़ाएंगे। उसके बाद श्रद्धालुओं के लिए कपाट खोल दिया जाएगा।

जीरो वेस्ट त्योहार के रूप में मनाया जाएगा मेला

नगर निगम ने मकर संक्रांति के अवसर पर लगने वाले खिचड़ी मेला को जीरो वेस्ट त्योहार के तौर पर मनाने की तैयारी की है। मेले के दौरान आने वाले श्रद्धालुओं को सफाई के प्रति जागरूक करने के साथ ही जगह–जगह डस्टबिन रखे जाएंगे।

नियमित सफाई के लिए 213 सफाई कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। मेला परिसर में एकत्रित होने वाले कूड़े को निस्तारण के लिए ले जाने के लिए जीपीएस युक्त वाहन लगाए गए हैं। पंडालों के माध्यम से लोगों को जागरूक करने के साथ ही स्वच्छ सर्वेक्षण– 2024 का प्रचार–प्रसार भी किया जाएगा। यहां हेल्प डेस्क की भी व्यवस्था की गयी है। पंडाल के बाहर एलईडी टीवी की भी व्यवस्था की गई है, जिसपर जागरूकता संदेशों का प्रसारण कराया जाएगा।

अस्पतालों में 24 घंटे मिलेगी सेवाएं

खिचड़ी मेले के दृष्टिगत स्वास्थ्य विभाग ने तैयारी लगभग पूरी कर ली है। मेले में 40 डॉक्टरों की ड्यूटी लगाई गई है। पैरामेडिकल स्टाफ, स्टाफ नर्स व वार्ड ब्वाय 20–20 की संख्या में तैनात किए गए हैं। स्वास्थ्य विभाग के शिविर में हेल्थ एटीएम भी लगाई जाएगी। 24 घंटे डाक्टर व स्वास्थ्य कर्मी मौजूद रहेंगे। पीड़ितों का उपचार किया जाएगा।

मंदिर के आसपास के सभी 21 अस्पतालों को 24 घंटे इमरजेंसी सेवा बहाल रखने का निर्देश दिया गया है। सात एंबुलेंस भी लगाई गई हैं। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा.आशुतोष कुमार दुबे ने बताया कि खिचड़ी मेले को देखते हुए सभी तैयारी पूरी कर ली गई है। सामान्य रूप से बीमार होने पर श्रद्धालुओं का वहीं उपचार किया जाएगा। गंभीर होने पर एंबुलेंस से उन्हें अस्पताल भेजा जाएगा। इसके लिए गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय समेत रेलवे स्टेशन से लेकर राजेंद्र नगर तक के सभी अस्पतालों को 24 घंटे इमरजेंसी खोले रखने का निर्देश दिया गया है।

दिखने लगी खिचड़ी मेले की अनुपम छटा

जुटेगी श्रद्धालुओं की भीड़ मंकर संक्रांति के अवसर पर गोरखनाथ मंदिर परिसर में लगने वाले खिचड़ी मेले की छटा दिखने लगी है। दर्जनों प्रकार के झूले सहित सभी दुकानें सज चुकी हैं। ठंड के बावजूद लोगों ने मेले का लुत्फ उठाना शुरू कर दिया है। हालांकि इसकी औपचारिक शुरुआत मकर संक्रांति के दिन यानी 15 जनवरी से होगी। मेला प्रबंधक शिवशंकर उपाध्याय ने बताया कि बच्चों का झूलों के प्रति विशेष आकर्षण है। प्रतिदिन बड़ी संख्या में बच्चे मेला परिसर में आ रहे हैं और टोराटोरा, ब्रेकडांस, ड्रेगन, रेंजर, ज्वाइंट व्हील, स्लंबो, बड़ी नाव जैसे झूलों का जमकर लुत्फ उठा रहे हैं। महिलाएं मेले में घरेलू सामान और आर्टिफिशियल आभूषणों की खरीदारी कर रही हैं। युवाओं का फोकस खानपान के स्टालों की ओर है।

आ गया नया नियम, गाय–भैंस रखने के लिए लेना होगा लाइसेंस

संवाददाता, गोरखपुर। नगर निगम क्षेत्र में दो या उससे अधिक गाय–भैंस रखने वाले सभी लोगों को नगर निगम से लाइसेंस लेना होगा। गाय के लिए 500 रुपये और भैंस के लिए एक हजार रुपये लाइसेंस शुल्क जमा होगा। हर साल नवीनीकरण कराना होगा। शासन की ओर से डेयरी को लेकर तैयार उपविधि को नगर निगम बोर्ड ने गत दिनों अपनी मंजूरी दे दी है। जल्द ही गजट प्रकाशन हो जाने की उम्मीद है, जिसके बाद निगम प्रशासन सख्ती शुरू कर देगा।

अभी नगर निगम में प्रविधान नहीं होने की वजह से प्रभावी कार्रवाई नहीं हो पा रही थी। अधिकारी मौखिक जुर्माने की बात कहते थे, मगर कागजों तक यह कार्रवाई नहीं पहुंच पाती थी। नियमावली के अनुपालन के लिए नगर आयुक्त, लाइसेंस प्राधिकारी एवं निरीक्षण प्राधिकारी की नियुक्ति करेंगे। निगम प्रशासन के मुताबिक अब दो या दो से अधिक गाय व भैंस पालने वालों को वार्षिक लाइसेंस लेना होगा। इसकी अवधि एक अप्रैल से उस वित्तीय वर्ष तक के लिए होगी।

लाइसेंस के लिए क्या जरूरी ?

लाइसेंस के लिए जरूरी है कि पशुपालक पशुओं को स्वस्थ दशा व स्वच्छ स्थान पर रखें। निरीक्षण के बाद ही लाइसेंस जारी किया जाएगा। प्रत्येक पशु के लिए आठ वर्ग मीटर का हवादार स्थल, ठंड, धूप और बारिश से बचाव के साथ खाने–पीने के लिए उचित इंतजाम जरूरी किए गए हैं। गोबर समेत अन्य कचरा, पशुशाला से कम से कम सात मीटर दूर रखनी होगी। डेयरी की फर्श भी पक्की होनी चाहिए।

पशुपालक अप्रैल माह में लाइसेंस नहीं लेता तो उसे लाइसेंस शुल्क के अलावा पहले महीने के लिए 100 रुपये और उसके बाद के महीनों के लिए 50 रुपये प्रतिमाह विलंब शुल्क देना होगा। नियमों की अनदेखी पर पहली बार अवैध डेयरी संचालक पर एक हजार रुपये और दूसरी बार दो हजार रुपये जुर्माना देना होगा। अवैध डेयरी पर अधिकतम 50 हजार रुपये जुर्माना लगाया जा सकेगा।

लाइसेंस के लिए मिलेगा टोकन

लाइसेंस लेने पर पशुपालक को निगम की ओर से टोकन मिलेगा, जिसे पशु की गर्दन में ऐसे बांधना होगा ताकि वह साफ तौर पर दिखाई दे। टोकन से गाय व भैंस के मालिक की पहचान हो सकेगी।

गली, सड़क, पार्क में खुले नहीं छोड़ सकेंगे गाय–भैंस

नियमावली के मुताबिक कोई भी पशुपालक, सार्वजनिक स्थानों जैसे गली, सड़क, पार्क के आसपास गाय–भैंस को खुले में नहीं छोड़ सकेगा। पशुओं के परिवहन की अनुमति लेनी होगी। लोकहित में पशुओं को निगम सीमा के भीतर रखने के लिए नगर आयुक्त से अनुमति लेनी होगी। कचरा व गोबर हटाने में निगम सहयोग करेगा, लेकिन इसके लिए पशुपालकों को नियमानुसार भुगतान करना होगा।

दो या उससे अधिक गाय–भैंस रखने वाले सभी लोगों को नगर निगम से लाइसेंस लेना होगा। इस सिलसिले में जल्द ही गजट प्रकाशन हो जाने की उम्मीद है जिसके बाद निगम प्रशासन सख्ती शुरू कर देगा। लाइसेंस के लिए जरूरी है कि पशुपालक पशुओं को स्वस्थ दशा व स्वच्छ स्थान पर रखें। निरीक्षण के बाद ही लाइसेंस जारी किया जाएगा।

'पाप धोने का मौका खोया...

कांग्रेस के राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा का न्योता ठुकराने पर भड़की भाजपा

भाजपा ने आरोप लगाया कि भारत का इतिहास जब–जब करवट ले रहा होता है, तब–तब कांग्रेस उस अवसर के साथ खड़े न होकर उसका बहिष्कार करती है।

नई दिल्ली। कांग्रेस आलाकमान की तरफ से राम मंदिर के उद्घाटन समारोह का न्योता ठुकराने पर भाजपा भड़क गई है। पार्टी ने गुरुवार को आरोप लगाया कि कांग्रेस अब बहिष्कार पार्टी बन गई है। इन्होंने भगवान राम तक को काल्पनिक कहा था, जबकि महात्मा गांधी खुद राम–राज्य की कल्पना करते थे। भाजपा ने आरोप लगाया कि यह कांग्रेस अब गांधी की नहीं नेहरु की बन कर रह गई है। इन्होंने कुछ समय पहले ही कांग्रेस के नेता रहे पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के भारत रत्न सम्मान समारोह तक का बहिष्कार किया था।

अखिलेश ने तो न्योते का पत्र तक नहीं स्वीकारा: हरनाथ यादव

भाजपा सांसद हरनाथ सिंह यादव ने निशाना साधते हुए कहा, "कांग्रेस ने शुरुआत से ही राम जन्मभूमि पर मंदिर का विरोद किया। उसने रास्ते में रोड़े लगाने का कोई मौका नहीं छोड़ा। उनके पास अपने पाप और अपराधों को धोने का मौका था, लेकिन उन्होंने वो भी गंवा दिया। इस देश के लोग भगवान राम के साथ खड़े हैं। कांग्रेस ही नहीं, समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव तो न्योते को स्वीकारने से भी इनकार कर चुके हैं। वे भी अपने पिता की गलतियों का प्रायश्चित कर सकते थे। लेकिन उन्होंने यह मौका गंवा दिया। राम और कृष्ण विरोधी ताकतें इस देश में मजबूत हो रही हैं। ये सभी हिंदू–विरोधी ताकतें हैं।"

केंद्रीय मंत्री बोले– कांग्रेस के फैसले से आश्चर्य नही

कांग्रेस द्वारा राम मंदिर 'प्राण प्रतिष्ठा' के निमंत्रण को अस्वीकार करने पर केंद्रीय मंत्री प्रहलाद जोशी ने कहा, "कांग्रेस पार्टी का शुरू से ही यही रवैया रहा है, यहां तक कि जब पुनर्निर्माण के बाद सोमनाथ मंदिर का उद्घाटन हुआ था, उस समय तत्कालीन राष्ट्रपति ने वहां जाने का फैसला किया था, लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री और कांग्रेस पार्टी ने इस कदम का विरोध किया... उस दिन से कांग्रेस पार्टी तुष्टिकरण के लिए लगातार हिंदू मान्यताओं का विरोध कर रही है। इन 30–40 वर्षों के दौरान जब भी राम मंदिर का मुद्दा आया, या तो उन्होंने इसकी आलोचना की या इसका विरोध किया... इसलिए उनके इस फैसले से मुझे आश्चर्य नहीं हुआ..." भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने आगे कहा, "कांग्रेस ने इससे पहले हमारे पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद जी और अब द्रौपदी मुर्मू जी के संसद में अभिभाषण का बहिष्कार किया। 2004 के बाद 2009 तक कांग्रेस ने कारगिल विजय दिवस का बहिष्कार किया। मई 1998 में अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार के नेतृत्व में हुए पोखरण परमाणु परीक्षण के बाद 10 दिन तक कांग्रेस ने कोई बयान नहीं दिया था। भाजपा ने कहा, "और तो और पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी जी, जो इन्हीं की पार्टी के थे उनके भारत रत्न समारोह का भी कांग्रेस ने बहिष्कार कर दिया था। अभी कुछ महीने पहले उन्होंने नए संसद भवन के उद्घाटन का बहिष्कार किया। जब ळेज लागू हुआ तो उसका भी बहिष्कार किया। ळ20 के समय दुनिया के सबसे शक्तिशाली 20 देशों के राष्ट्राध्यक्ष भारत आए थे, उसमें भी महामहिम राष्ट्रपति के द्वारा दिए गए भोज का भी कांग्रेस ने बहिष्कार किया।"

भाजपा प्रवक्ता ने आरोप लगाते हुए कहा कि किसी भी अच्छे से अच्छे अनुष्ठान में विघ्न उत्पन्न करके संतोष प्राप्त करने वाली प्रवृत्ति की परिचायक कांग्रेस के साथ पता नहीं कौन सी समस्या है? भारत का इतिहास जब–जब करवट ले रहा होता है, तब–तब वो उस अवसर के साथ खड़े न होकर उसका बहिष्कार करते हैं।

अयोध्या–अहमदाबाद के बीच शुरू हुई इंडिगो की हवाई सेवा

मुख्यमंत्री योगी ने दिखाई हरी झंडी

लखनऊ। अहमदाबाद से अयोध्या के बीच अब सीधी हवाई सेवा का शुभारंभ हो गया है। गुरुवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सुविधा का शुभारंभ करते हुए प्रदेश में हवाई क्षेत्र में बढ़ी सुविधाओं का जिक्र किया। धर्मनगरी अयोध्या में प्रभु श्रीराम के दर्शन–पूजन की चाह रखने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को अहमदाबाद–अयोध्या के बीच सीधी हवाई सेवा का विकल्प मिल गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को आयोजित एक कार्यक्रम में अहमदाबाद–अयोध्या के लिए इंडिगो एयरलाइंस की सीधी हवाई सेवा का गुरुवार को शुभारंभ किया।

अयोध्या–अहमदाबाद के बीच नई हवाई सेवा के शुभारंभ पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इस उड़ान सेवा से भगवान श्रीराम की नगरी अयोध्या, हवाई सेवा द्वारा, सीधे अहमदाबाद से जुड़ गयी है। अयोध्या से दिल्ली के बाद अहमदाबाद दूसरा कनेक्टेड स्थल है। आगामी 15 जनवरी से मुम्बई के लिए उड़ान सेवा आरम्भ हो जाने के पश्चात मुम्बई तीसरा कनेक्टेड स्थल हो जाएगा। इसके अतिरिक्त, दिनांक 16 जनवरी, 2024 से दिल्ली के लिए एक और उड़ान आरम्भ हो रही है। मुख्यमंत्री ने बेहतर हवाई सेवाओं को पर्यटन और व्यापार की गतिविधियों को इससे बड़ा प्रोत्साहित करने वाला बताया। प्रदेश में बेहतर होती हवाई सेवाओं की चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2016–17 में प्रदेश में हवाई यात्रियों की संख्या 59.97 लाख थी, जो वित्तीय वर्ष 2022–23 में बढ़कर 96.02 लाख हो गयी। विगत 03 वर्षों में प्रदेश में हवाई यात्रियों की संख्या में 29.46 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी है।

उन्होंने कहा कि वर्ष 2016–17 में लखनऊ एयरपोर्ट पर यात्रियों की संख्या 39. 68 लाख, वाराणसी में 19.16 लाख, गोरखपुर में 54 हजार तथा प्रयागराज में 45 हजार थी। जबकि वर्ष 2022–23 में लखनऊ एयरपोर्ट पर यात्रियों की संख्या बढ़कर 52.20 लाख, वाराणसी में 25.21 लाख, गोरखपुर में 7.18 लाख तथा प्रयागराज में 5.71 लाख हो गयी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की परिकल्पना है कि एक सामान्य नागरिक भी हवाई जहाज में यात्रा करे, हवाई चप्पल पहनने वाला व्यक्ति भी हवाई सेवा का लाभ उठाये। राज्य सरकार इस परिकल्पना को साकार करने के लिए प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य कर रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अयोध्या में 05 वर्ष पहले तक एक छोटी सी एयरस्ट्रिप थी लेकिन आज वहां महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट संचालित हो रहा है। आज हर व्यक्ति अयोध्या आने का इच्छुक है। इसलिए प्रधानमंत्री मोदी के विजन के अनुरूप सरकार ने सड़क, रेल और वायु मार्ग की बेहतर कनेक्टिविटी दी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अयोध्या अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के लिए 821 एकड़ की भूमि राज्य सरकार ने उपलब्ध कराई और केंद्रीय नागर विमानन मंत्रालय ने समयबद्धता के साथ विश्वस्तरीय एयरपोर्ट तैयार कराया।

उत्तर प्रदेश में इंडियो एयरलाइन्स की उपस्थिति का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इंडिगो द्वारा उत्तर प्रदेश के 08 नगरों लखनऊ, गोरखपुर, वाराणसी, कानपुर, आगरा, प्रयागराज, बरेली तथा अयोध्या से उड़ान सुविधा दी जा रही है। इसमें लगातार बढोतरी भी हो रही है। उन्होंने कहा कि लखनऊ एयरपोर्ट से उड़ान वर्ष 2009 में प्रारम्भ हुई। वर्तमान में 13 कनेक्टेड राष्ट्रीय गंतव्य स्थलों के लिए 84 उड़ानें प्रतिदिन उपलब्ध हैं।

इसी तरह, वाराणसी एयरपोर्ट से 06 कनेक्टेड राष्ट्रीय गंतव्य स्थलों के लिए 34 उड़ानें, गोरखपुर एयरपोर्ट से 04 कनेक्टेड राष्ट्रीय गंतव्य स्थलों के लिए 06 उड़ानें, प्रयागराज एयरपोर्ट से 10 कनेक्टेड राष्ट्रीय गंतव्य स्थलों के लिए 11 उड़ानें, आगरा एयरपोर्ट 06 कनेक्टेड राष्ट्रीय गंतव्य स्थलों के लिए 06 उड़ानें, कानपुर एयरपोर्ट से 03 कनेक्टेड राष्ट्रीय गंतव्य स्थलों के लिए 03 उड़ानें, बरेली एयरपोर्ट से 03 कनेक्टेड राष्ट्रीय गंतव्य स्थलों के लिए 03 उड़ानें प्रतिदिन उपलब्ध हैं।

रामलला विग्रह की विदेशों में भी बड़ी प्रतीक्षा है, बोले केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य लसधिया

केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि आगामी 22 जनवरी को अयोध्या में श्रीरामलला के नव विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा की न केवल 140 करोड़ भारतीयों बल्कि विदेशों में भी बड़ी प्रतीक्षा है। केंद्रीय मंत्री ने बीते 30 दिसंबर को महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के शुभारंभ के दिन के अनुभव साझा करते हुए कहा कि अयोध्या में ऐसा लगा कि मानो हर कोई अपने प्रभु श्रीराम के स्वागत में आह्लादित है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नव्य अयोध्या बनाई है। अयोध्या एयरपोर्ट सहित विभिन्न विकास परियोजनाओं की समयबद्धता पर खुशी जाहिर करते हुए उन्होंने कहा कि 'जहां होता है राम का नाम–वहां पूरे होते हैं सारे काम।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सहयोग से ही महज 20 महीने में यह एयरपोर्ट बन सका। इतनी कम अवधि में हवाईअड्डा बनना, एक रिकॉर्ड है। अहमदाबाद और अयोध्या के बीच इंडिगों की फ्लाइट सेवा के शुभारंभ पर सभी को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि इस फ्लाइट के माध्यम से वाइब्रेंट गुजरात और आध्यत्मिक अयोध्या का संगम हो रहा है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि जिस उत्तर प्रदेश में 2014 में 700 एयरक्राफ्ट प्रति सप्ताह था, आज 137 गुना बढ़कर 1654 एयर मूवमेंट प्रति सप्ताह तक पहुंच गया है। बहुत जल्द अलीगढ़, आजमगढ़, चित्रकूट, श्रावस्ती में भी हवाई सेवा शुरू होने जा रही है।

कार्यक्रम में, इंडिगो एयरलाइंस के स्पेशल डायरेक्टर आरके सिंह ने देश के सिविल एविएशन सेक्टर में इंडिगो एयरलाइंस की मजबूत उपस्थिति की जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान में इंडिगो हर दिन उत्तर प्रदेश के 07 हवाईअड्डों से 165 उड़ानें भर रहा है। आने वाले दिनों में इसमें और बढ़ोतरी सुनिश्चित है। अयोध्या–अहमदाबाद के बीच शुरू हुई नई फ्लाइट के बारे में जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि दोनों ओर से फ्लाइट सप्ताह में तीन दिन में उपलब्ध होगी। इस मौके पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और फ्लाइट संख्या 6ई112 की अयोध्या से पहली उड़ान के पहले यात्री को बोर्डिंग पास भी प्रदान किया गया। वर्चुअल माध्यम से हुए इस कार्यक्रम में सांसद लल्लू सिंह और सांसद किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी और इंडिगो के प्रतिनिधिगणों की भी उपस्थिति रही।

महिलाओं से अश्लील हरकतें, गंदे कमेंट मध्यप्रदेश में सबसे ज्यादा

देश के 19 शहरों में ऐसे अपराध सबसे ज्यादा...

नई दिल्ली

मध्यप्रदेश को देश का दिल कहते हैं, लेकिन सार्वजनिक जगहों पर अश्लील हरकतें, गंदे कमेंट और अश्लील गाना गाने के सबसे ज्यादा मामले भी वहीं दर्ज हुए हैं। केंद्र सरकार द्वारा एनसीआरबी के डेटा के आधार पर तैयार कराई गई रिपोर्ट के मुताबिक 2022-23 में देशभर में ऐसे 25,741 मामले दर्ज हुए। इनमें सबसे ज्यादा 39% यानी 10,133 केस मध्यप्रदेश के हैं। दूसरे नंबर पर तमिलनाडु और तीसरे पर महाराष्ट्र है। यह रिपोर्ट नैतिक मूल्यों से जुड़े अपराध के मामलों का आकलन करने और संबंधित राज्यों को इनमें सुधार के निर्देश देने के लिए बनवाई गई है।

इसके अतिरिक्त देश के 19 बड़े शहरों में ऐसे अपराध सबसे ज्यादा हुए हैं। इनमें महाराष्ट्र का नागपुर पहले तो मध्यप्रदेश का इंदौर छठे नंबर पर है।

टॉप-12, जहां सबसे ज्यादा मामले

राज्य	मामले
मध्यप्रदेश	10,133
तमिलनाडु	5,356
महाराष्ट्र	4,222
उत्तरप्रदेश	2,874
केरल	955
आंध्रप्रदेश	657
छत्तीसगढ़	579
असम	343
हरियाणा	234
तेलंगाना	187
ओडिशा	75
गुजरात	54

बड़े शहरों में नागपुर सबसे बदनाम...

बड़े 19 शहरों के थानों में इस तरह के अपराधों पर दर्ज मामलों के अध्ययन में पता चला कि महाराष्ट्र के दो बड़े शहर पहले और दूसरे नंबर पर हैं।

शहर	केस	शहर	केस
नागपुर, महाराष्ट्र	471	इंदौर, मध्यप्रदेश	44
मुंबई, महाराष्ट्र	121	चेन्नई, तमिलनाडु	25
कानपुर, उत्तरप्रदेश	95	हैदराबाद, तेलंगाना	20
कोच्चि, केरल	52	गाजियाबाद, यूपी	12
कोझिकोड, केरल	50	दिल्ली व पुणे	10-10

ओटीटी पर इन हसीनाओं का जलवा

ओटीटी का क्रेज दिन व दिन बढ़ता जा रहा है। ऐसे में कई बड़े सितारे भी ओटीटी की तरफ अपना रुख मोड़ रहे हैं। दर्शक सिनेमाघरों के अलावा ओटीटी पर भी फिल्मों और वेब सीरीज का लुत्फ उठाते हैं। ओटीटी की दुनिया में बॉलीवुड की कई हसीनाएं भी अपने शानदार अभिनय के झंडे गाढ़ चुकी हैं। इन अभिनेत्रियों ने ओटीटी पर अपनी दमदार एक्टिंग से दर्शकों के दिलों पर अपनी गहरी छाप छोड़ी है। ओटीटी की दुनिया में इन अदाकाराओं ने खूब नाम कमाया है, इनके अभिनय को देख लोग इनकी सराहना किए बिना नहीं रह पाए हैं। तो आइए जानते हैं, उन अभिनेत्रियों के बारे में जो ओटीटी पर झंडे गाड़ चुकीं हैं।

करीना कपूर खान

बॉलीवुड की बेबो यानी करीना कपूर खान ने बीते साल 2023 में फिल्म जाने जां से ओटीटी की दुनिया में कदम रखा है। इस सीरिज में करीना के शानदार अभिनय की हर तरफ खूब सराहना हुई। करीना के साथ इसमें जयदीप अहलावत और विजय वर्मा अहम भूमिका में नजर आए थे।

तिलोत्तमा शोम

तिलोत्तमा शोम ने लस्ट स्टोरीज 2 में नजर आई थीं। इस फिल्म से उन्होंने अपने अभिनय का परचम लहराया। लस्ट स्टोरीज 2 में उनके जबर्दस्त अभिनय को देख हर कोई उनका दीवाना हो गया। दर्शक उनकी शानदार एक्टिंग से खूब प्रभावित हुए।

सान्या मल्होत्रा

बॉलीवुड अभिनेत्री सान्या मल्होत्रा ने कटहल में पुलिस ऑफिसर की भूमिका बखूबी निभाई थी। ओटीटी पर रिलीज हुई फिल्म में अभिनेत्री अपने किरदार में बिल्कुल डूबीनजर आई थीं। फिल्म में उनकी एक्टिंग लाजवाब रही।

वामिका गब्बी

अभिनेत्री वामिका गब्बी 'जुबली' में नजर आई थीं। इसमें उनकी जबर्दस्त एक्टिंग देखने को मिली। वेब सीरीज 'जुबली' में वामिका की दमदार एक्टिंग का हर कोई कायल हो गया। सीरिज में उनके अभिनय की हर तरफ खूब प्रशंसा हुई।

करिश्मा तन्ना

टीवी की जानी–मानी अभिनेत्री करिश्मा तन्ना ने स्कूप सीरीज से ओटीटी में अपना खूब नाम कमाया। यह सीरिज एक रियल पत्रकार के जीवन पर आधारित है। स्कूप में करिश्मा के किरदार से उन्हें खूब सफलता मिली। हर तरफ उनके शानदर अभिनय की सराहना हुई।

सिर्फ नाजिला और आयशा नहीं

रो–रो कर पत्नी ने कही थी ये बात

एंटरटेनमेंट डेस्क, नई दिल्ली। बिग बॉस 17 में एक बार फिर मुनव्वर फारुकी के लिए मुसीबत खड़ी हो गई है। आयशा खान ने दोबारा उन्हें एक्सपोज कर दिया है और कॉमेडियन अपना बचाव भी नहीं कर पाए।

पिछली बार नाजिला सिताशी को धोखा देने और ब्रेकअप की बात सामने आई थी। वहीं, इस बार मुनव्वर फारुकी की एक्स वाइफ को लेकर ऐसा खुलासा हुआ है, जिसे सुन कॉमेडियन के फैंस शॉक्ड रह जाएंगे।

मुनव्वर का हुआ पर्दाफाश

बिग बॉस 17 के घर में बीते दिन जमकर हल्ला दंगा हुआ। मुनव्वर फारुकी ने पर्सनल रीजन बताते हुए आयशा खान को नॉमिनेट कर दिया। धीरे– धीरे बात इतनी बढ़ गई कि आयशा ने बिग बॉस खत्म होने के चंद दिनों पहले मुनव्वर फारुकी का बड़ा राज खोल दिया।

एक्स वाइफ को भी किया चीट

मुनव्वर फारुकी बिग बॉस के घर में कई बार अपने तलाक और बेटे को लेकर बात करते हुए नजर आए हैं। इस दौरान वो इमोशनल भी नजर आए। हालांकि, उन्होंने तलाक की वजह का खुलासा नहीं किया था। वहीं, अब बात सामने आई है कि मुनव्वर ने अपनी एक्स वाइफ को भी चीट किया था।

नाजिला के साथ मिलकर पत्नी को दिया धोखा

आयशा खान पहले से मुनव्वर फारुकी से नाराज थीं। ऐसे में जब दोनों का आमना– सामना हुआ और बात बहसबाजी तक पहुंच गई, तो अपना आपा खो बैठीं। आयशा ने घरवालों को बताया कि मुनव्वर ने अपनी एक्स वाइफ को भी धोखा दिया था, वो भी नाजिला सिताशी के साथ मिलकर। आयशा ने ये भी दावा किया कि ये बात उन्हें नाजिला ने खुद बताई है, जो वो उनके घर आई थीं।

आयशा ने खोले राज

मुनव्वर फारुकी का ये राज सुनकर अंकिता लोखंडे ने सवाल किया कि अगर ऐसा है, तो उसकी एक्स वाइफ ने कभी कुछ बोला क्यों नहीं? इस पर आयशा ने कहा कि इस आदमी ने उसको गांव ले जाकर ऐसी जगह फेंका है, जहां से वो कुछ नहीं कर सकती और अब तो उसकी दूसरी शादी भी हो गई है।

रो–रो कर एक्स वाइफ ने कही थी ये बात

आयशा खान ने ये भी बताया कि जब मुनव्वर फारुकी एक्स वाइफ को चीट कर रहे थे। उस दौरान उनकी पत्नी का रो–रो कर बुरा हाल हो गया था। यहां तक कि वीडियो कॉल पर भी वो रो रही होती थीं और मुनव्वर से पूछती थीं कि आखिर वो नाजिला से क्यों बात करे हैं, उसके साथ क्यों हैं। इस पर जवाब देने की बजाय मुनव्वर उल्टा पत्नी से सवाल करते थे कि आखिर वो नाजिला को क्यों फोन करती है। आयशा ने कहा कि उन्होंने मुनव्वर और उनकी पत्नी के वीडियो कॉल की रिकॉर्डिंग देखी, जो उन्हें नाजिला ने दिखाई है।

दी नेक्स्ट पोस्ट
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला,
Tital code: UPHIN51019
बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com
नोटः- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।